

1-इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य-भाग १ QA

अध्याय 1: किंकर्तव्य विमूढता जैसी परिस्थितियाँ

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: बीसवीं सदी की दो बड़ी उपलब्धियाँ क्या थीं?

उत्तर: बीसवीं सदी की दो बड़ी उपलब्धियाँ विज्ञान और बुद्धिवाद थीं।

2. प्रश्न: विज्ञान और बुद्धिवाद के दुरुपयोग से क्या हानियाँ हुईं?

उत्तर: इनके दुरुपयोग से आर्थिक उपनिवेशवाद, युद्ध, बेरोजगारी और गरीबी जैसी हानियाँ और समस्याएँ उत्पन्न हुईं।

3. प्रश्न: कारखानों और वाहनों से निकलने वाले धुएँ का वायुमंडल पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

उत्तर: कारखानों और वाहनों से निकलने वाला विषैला धुँआ वायुमंडल को जहरीला बना रहा है, जिससे "ग्रीन हाउस इफेक्ट" के कारण तापमान बढ़ रहा है और ओजोन परत फट रही है।

4. प्रश्न: ओजोन कवच पृथ्वी की रक्षा कैसे करता है?

उत्तर: ओजोन कवच ब्रह्मांडीय किरणों और सूर्य की हानिकारक किरणों की अत्यधिक मात्रा को पृथ्वी पर आने से रोककर जीवन की रक्षा करता है।

5. प्रश्न: अणु-ऊर्जा के विकास से कौन-सी दो प्रमुख समस्याएँ उत्पन्न हुई हैं?

उत्तर: अणु-ऊर्जा के विकास से विकिरण फैलने की और उसके द्वारा उत्पन्न राख को सुरक्षित रूप से निपटाने की समस्या उत्पन्न हुई है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विज्ञान के प्रत्यक्षवादी दर्शन ने मनुष्य के नैतिक मूल्यों को कैसे प्रभावित किया है?

उत्तर: विज्ञान का प्रत्यक्षवादी दर्शन केवल उसी को सत्य मानता है जो सामने दिखता है, जिससे परोक्ष सत्ताओं जैसे ईश्वर और धर्म की मान्यता कम हो गई। इसके परिणामस्वरूप, संयम, सदाचार, और पुण्य-परमार्थ जैसे नैतिक मूल्यों का स्थान तात्कालिक लाभ और स्वेच्छाचारिता ने ले लिया है, क्योंकि मर्यादाओं को अंधविश्वास माना जाने लगा है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, कुशल कारीगरी के विकास का गृह उद्योगों पर क्या नकारात्मक प्रभाव पड़ा?

उत्तर: कुशल कारीगरी के विकास और बड़े पैमाने पर उत्पादन के कारण गृह उद्योगों के सहारे जीवनयापन करने वाले कारीगरों का काम छिन गया। इससे बड़ी संख्या में लोग बेरोजगार हो गए और उनकी आर्थिक स्थिति दिनोंदिन खराब होती चली गई।

3. प्रश्न: खनिज भंडारों के तेजी से हो रहे दोहन के क्या दूरगामी परिणाम बताए गए हैं?

उत्तर: खनिज ईंधन का तेजी से दोहन होने के कारण यह अनुमान है कि वे एक शताब्दी भी और नहीं चल पाएंगे। धातुओं और रसायनों के उत्खनन से पृथ्वी इन सम्पदाओं से खाली हो रही है, जिससे धरातल की उत्पादन क्षमता घट रही है और इसका सीधा प्रभाव प्राणियों के जीवन-निर्वाह पर पड़ रहा है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. **प्रश्न:** "लाभ के स्थान पर नई हानियाँ" - इस कथन के माध्यम से लेखक विज्ञान और बुद्धिवाद के विकास की क्या विडंबना प्रस्तुत कर रहे हैं? विस्तार से समझाएँ।

उत्तर: लेखक यह विडंबना प्रस्तुत कर रहे हैं कि जिन विज्ञान और बुद्धिवाद को मानव प्रगति और सुविधा के लिए चमत्कार माना गया, उन्हीं के अमर्यादित दुरुपयोग ने लाभ से कहीं अधिक हानियाँ उत्पन्न कर दी हैं। उदाहरण के लिए, उत्पादन बढ़ाने वाली फैक्ट्रियाँ प्रदूषण फैला रही हैं, तेज वाहन वायुमंडल को जहरीला बना रहे हैं, और आर्थिक प्रगति के लिए युद्धों को उकसाया जा रहा है। इस प्रकार, जो विकास का साधन होना चाहिए था, वही मनुष्य के लिए नई समस्याओं और विपत्तियों का कारण बन गया है, जो एक गंभीर विरोधाभास है।

2. **प्रश्न:** अध्याय में वर्णित परिस्थितियों को "किंकर्तव्य विमूढता" क्यों कहा गया है? यह स्थिति भविष्य के लिए क्या संकेत देती है?

उत्तर: इन परिस्थितियों को "किंकर्तव्य विमूढता" (अर्थात्, क्या करें और क्या न करें की उलझन) इसलिए कहा गया है क्योंकि मनुष्य अपने ही विकास के जाल में उलझ गया है। एक तरफ वैज्ञानिक प्रगति से मिली सुविधाएँ हैं, तो दूसरी तरफ उसी प्रगति से उत्पन्न विनाशकारी संकट जैसे प्रदूषण, संसाधनों की कमी, और नैतिक पतन हैं। यह स्थिति भविष्य के लिए एक गंभीर चिंता का संकेत देती है, क्योंकि इन समस्याओं का कोई स्पष्ट समाधान नहीं दिख रहा है और यह समझ नहीं आ रहा कि इस विनाशकारी दिशा से कैसे मुड़ा जाए।

अध्याय 2: स्थिति निश्चित ही विस्फोटक

सरल स्तर के प्रश्न

1. **प्रश्न:** विज्ञान के दुरुपयोग का क्रम रुका है या बढ़ रहा है?

उत्तर: विज्ञान के दुरुपयोग का क्रम रुका नहीं है, बल्कि दिन-प्रतिदिन उसका विस्तार हो रहा है।

2. **प्रश्न:** विज्ञान का दर्शन किस वाद पर आधारित है?

उत्तर: विज्ञान का दर्शन प्रत्यक्षवाद पर आधारित है।

3. **प्रश्न:** प्रत्यक्षवाद के सिद्धांत ने किन चीजों को अस्वीकार कर दिया है?

उत्तर: प्रत्यक्षवाद के सिद्धांत ने परोक्ष सत्ताओं जैसे ईश्वर, धर्म, संयम, सदाचार और पुण्य-परमार्थ को अस्वीकार कर दिया है।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार, अन्य प्राणियों के प्रति निष्ठुरता का मनुष्यों पर क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: अन्य प्राणियों के प्रति निष्ठुरता बरतने से मनुष्य के अंदर का नैतिक बाँध टूट जाता है और फिर मनुष्यों के साथ भी निष्ठुरता बरतने का कोई सैद्धांतिक कारण शेष नहीं रह जाता।

5. प्रश्न: आधुनिकता मनुष्य को कैसा बनाती जा रही है?

उत्तर: आधुनिकता, नीति और सदाचार का उन्मूलन करके मनुष्य को स्वेच्छाचारी बनाती जा रही है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विज्ञान के दर्शन ने व्यक्तिगत और सामाजिक व्यवहार को नकारात्मक रूप से कैसे प्रभावित किया है?

उत्तर: विज्ञान के प्रत्यक्षवादी दर्शन ने तात्कालिक लाभ को प्राथमिकता दी है। इसने मर्यादाओं और नैतिक वर्जनाओं को 'अंधविश्वास' कहकर खारिज कर दिया, जिससे व्यक्ति की निजी सुविधाओं को पूरा करने पर जोर दिया गया। इसके परिणामस्वरूप, समाज में स्वेच्छाचार, यौन उन्मुक्तता और सिद्धांतों की अवहेलना जैसी प्रवृत्तियाँ बढ़ी हैं, जो सामाजिक ताने-बाने को कमजोर करती हैं।

2. प्रश्न: "पूर्ति का सिद्धांत यही कहता है कि जिस प्रकार भी, जितना भी लाभ उठाया जा सके, उठाना चाहिए" - इस मान्यता के क्या दुष्परिणाम हुए हैं?

उत्तर: इस मान्यता के कारण नैतिकता को ताक पर रख दिया गया है। इसने पशु-पक्षियों के वध को स्वाभाविक प्रक्रिया बनाकर कई गुना बढ़ा दिया है। यही मानसिकता मनुष्यों के प्रति भी निष्ठुरता का कारण बनती है और यौन स्वेच्छाचार को भी बढ़ावा देती है, क्योंकि तात्कालिक सुख और लाभ ही एकमात्र लक्ष्य बन जाता है।

3. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि वैज्ञानिक दुरुपयोग का भविष्य में क्या नतीजा निकलेगा, इसका अनुमान सहज ही लगाया जा सकता है?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि अब तक के वैज्ञानिक दुरुपयोग से उत्पन्न हानियाँ और समस्याएँ पहले से ही हमारे सामने हैं और उनका समाधान भी नहीं मिल पा रहा है। जब थोड़े समय के दुरुपयोग ने इतनी बड़ी समस्याएँ खड़ी कर दी हैं, तो भविष्य में इसके और अधिक बढ़ने से क्या अनर्थ हो सकता है, यह कल्पना करना कठिन नहीं है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, विज्ञान और नीति-सदाचार के बीच क्या टकराव है और इस टकराव ने मानव समाज को "विस्फोटक" स्थिति में कैसे पहुँचा दिया है?

उत्तर: अध्याय के अनुसार, विज्ञान का प्रत्यक्षवादी दर्शन केवल भौतिक और तात्कालिक लाभ पर केंद्रित है, जबकि नीति-सदाचार संयम, मर्यादा और दीर्घकालिक कल्याण पर जोर देता है। इस टकराव के कारण,

आधुनिकता ने नैतिक मूल्यों का उन्मूलन कर दिया है, जिससे मनुष्य स्वेच्छाचारी बन गया है। यह स्वेच्छाचारिता सामाजिक और पर्यावरणीय समस्याओं (जैसे यौन उन्मुक्तता, हिंसा, प्रदूषण) को बढ़ा रही है। जब समाज का हर व्यक्ति बिना किसी नैतिक अंकुश के केवल अपने लाभ के लिए काम करेगा, तो संघर्ष और विनाश की स्थिति उत्पन्न होना स्वाभाविक है, जिसे लेखक ने "विस्फोटक" कहा है।

2. प्रश्न: क्या विज्ञान का दर्शन स्वाभाविक रूप से नैतिकता-विरोधी है, या यह उसके उपयोग का तरीका है जो समस्या पैदा करता है? अध्याय के तर्कों के आधार पर विश्लेषण करें।

उत्तर: अध्याय के तर्कों के अनुसार, समस्या विज्ञान के दर्शन में नहीं, बल्कि उसके अमर्यादित उपयोग और उससे जन्मी एकांगी सोच में है। विज्ञान का प्रत्यक्षवाद पर आधारित होना स्वाभाविक है, लेकिन जब इस दर्शन को जीवन का एकमात्र आधार मानकर ईश्वर, धर्म और नैतिकता जैसी परोक्ष शक्तियों को पूरी तरह नकार दिया जाता है, तब समस्या उत्पन्न होती है। लेखक का मानना है कि विज्ञान और बुद्धिवाद की उपलब्धियाँ महान थीं, लेकिन उनके "दुरुपयोग" ने हानियाँ पैदा कीं। यदि विज्ञान और धर्म मिलकर चले होते, तो आज की उपलब्धियाँ सुख-शांति लातीं। अतः, समस्या विज्ञान में नहीं, बल्कि उसके दुरुपयोग और नैतिक मूल्यों से उसके अलगाव में है।

अध्याय 3: बढ़ती आबादी, बढ़ते संकट

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: जनसंख्या वृद्धि का मूल कारण क्या बताया गया है?

उत्तर: बन्धनमुक्त यौनाचार और कामुकता को प्राकृतिक मनोरंजन मानने की प्रवृत्ति को जनसंख्या वृद्धि का एक प्रमुख कारण बताया गया है।

2. प्रश्न: पिछले तीन हजार वर्षों में संसार की जनसंख्या कितनी बढ़ी है?

उत्तर: तीन हजार वर्ष पहले संसार की जनसंख्या मात्र तीस करोड़ थी, जो अब बढ़कर छह सौ करोड़ हो गई है।

3. प्रश्न: जनसंख्या वृद्धि के कारण जंगलों पर क्या असर हो रहा है?

उत्तर: आवास, खेती और अन्य जरूरतों के लिए जमीन की मांग बढ़ने के कारण जंगल बुरी तरह कट रहे हैं।

4. प्रश्न: वनों के कटने से कौन-कौन से संकट उत्पन्न हो रहे हैं?

उत्तर: वनों के कटने से वायु प्रदूषण की रोकथाम नहीं हो पाती, बाढ़ें आती हैं, भूमि कटती है, रेगिस्तान बनते हैं और नदियों की गहराई कम हो रही है, जिससे पानी का संकट बढ़ रहा है।

5. प्रश्न: बढ़ते हुए शहरों को नरक तुल्य क्यों कहा गया है?

उत्तर: बढ़ते हुए शहरों को घिचपिच, गंदगी और प्रदूषण के कारण नरक तुल्य कहा गया है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: जनसंख्या वृद्धि, खाद्य उत्पादन और आवास के बीच के जटिल संबंध को कैसे समझाया गया है?

उत्तर: जनसंख्या वृद्धि से भोजन और आवास की मांग बढ़ती है। आवास की मांग पूरी करने के लिए बहुमंजिला इमारतें बन रही हैं और खेती योग्य भूमि पर भी निर्माण हो रहा है, जिससे खाद्य उत्पादन के लिए भूमि कम पड़ रही है। इसके अलावा, सड़कों और स्कूलों जैसी अन्य जरूरतों के लिए भी जमीन चाहिए, जिसके लिए जंगलों को काटा जा रहा है, जो अंततः पर्यावरण को नुकसान पहुँचाकर खाद्य सुरक्षा को और खतरे में डालता है।

2. प्रश्न: पृथ्वी की सीमित पोषण क्षमता और बढ़ती आबादी के बीच टकराव को लेखक ने किस प्रकार प्रस्तुत किया है?

उत्तर: लेखक ने स्पष्ट किया है कि पृथ्वी की प्राणियों को पोषण देने की क्षमता सीमित है; वह असीम संख्या में प्राणियों का निर्वाह नहीं कर सकती। इसके विपरीत, जनसंख्या चक्रवृद्धि ब्याज की दर से बढ़ रही है। यह टकराव एक ऐसे संकट को जन्म दे रहा है जहाँ न केवल भोजन और आवास कम पड़ रहे हैं, बल्कि भविष्य में सड़कों पर चलना भी मुश्किल हो जाएगा, जो दर्शाता है कि हम पृथ्वी की वहन क्षमता को पार कर रहे हैं।

3. प्रश्न: "गर्भ निरोध से लेकर भ्रूण हत्याओं तक को प्रोत्साहन मिलने के बाद भी जनसंख्या वृद्धि में तेजी से बढ़ोत्तरी हो रही है।" इस पंक्ति का क्या आशय है?

उत्तर: इस पंक्ति का आशय है कि जनसंख्या नियंत्रण के आधुनिक और अनैतिक समझे जाने वाले उपाय भी बढ़ती आबादी की समस्या को रोकने में असफल साबित हो रहे हैं। यह दर्शाता है कि समस्या केवल तकनीकी समाधानों से हल नहीं हो सकती, बल्कि इसका मूल कारण लोगों की मानसिकता और बन्धनमुक्त यौनाचार जैसी सामाजिक प्रवृत्तियों में निहित है, जिन्हें संबोधित किए बिना जनसंख्या विस्फोट को रोकना असंभव है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, जनसंख्या वृद्धि केवल एक आर्थिक या पर्यावरणीय समस्या नहीं, बल्कि एक नैतिक और सामाजिक संकट भी है। इस कथन का विश्लेषण करें।

उत्तर: लेखक जनसंख्या वृद्धि को केवल भोजन और आवास की कमी तक सीमित नहीं रखते। वे इसका मूल कारण उन्मुक्त यौनाचार और कामुकता को मानते हैं, जो एक नैतिक पतन का संकेत है। इस वृद्धि के कारण शहरों का "नरक तुल्य" बनना, गंदगी और प्रदूषण का बढ़ना, एक सामाजिक संकट को दर्शाता है। जंगलों का कटना और प्राकृतिक संसाधनों का विनाश पर्यावरणीय संकट है। इस प्रकार, लेखक यह तर्क देते हैं कि जनसंख्या वृद्धि एक बहुआयामी संकट है, जिसकी जड़ें समाज के नैतिक मूल्यों के क्षरण में हैं और इसके परिणाम हर स्तर पर विनाशकारी हैं।

2. प्रश्न: क्या आपको लगता है कि इस अध्याय में जनसंख्या वृद्धि के लिए केवल व्यक्तिगत आचरण को दोषी ठहराया गया है, या इसमें व्यवस्थागत कारकों की भी कोई भूमिका है? विस्तार से तर्क दें।

उत्तर: अध्याय मुख्य रूप से व्यक्तिगत आचरण, जैसे "बन्धनमुक्त यौनाचार" और कामुकता को बढ़ावा देने वाली मानसिकता पर ध्यान केंद्रित करता है। हालाँकि, यह परोक्ष रूप से व्यवस्थागत कारकों की ओर भी इशारा करता है। विज्ञान और बुद्धिवाद की जिस धारा ने नैतिक मर्यादाओं को "अंधविश्वास" कहकर खारिज किया, वह एक व्यवस्थागत और वैचारिक बदलाव था। जब समाज और व्यवस्था ऐसी सोच को बढ़ावा देते हैं, तो व्यक्तिगत आचरण भी उसी दिशा में ढल जाता है। इसलिए, यद्यपि अध्याय में सीधे तौर पर व्यक्तिगत आचरण को दोषी ठहराया गया है, लेकिन इसकी जड़ें उस व्यापक वैचारिक और सामाजिक व्यवस्था में हैं जो तात्कालिक सुख और स्वेच्छाचार को प्रोत्साहित करती है।

अध्याय 4: हर ओर बेचैनी, व्याधियाँ एवं उद्विग्नता **सरल स्तर के प्रश्न**

1. प्रश्न: मनुष्य की जीवनी शक्ति दिनोंदिन क्यों घट रही है?

उत्तर: कोलाहल, प्रदूषण, गंदगी और बीमारियों जैसी विपत्तियों से घिरे रहने के कारण मनुष्य की जीवनी शक्ति दिनोंदिन घट रही है। अवश्य, चलिए इस पुस्तक के अगले अध्यायों के लिए प्रश्न-उत्तर की श्रृंखला को आगे बढ़ाते हैं।

अध्याय 4: हर ओर बेचैनी, व्याधियाँ एवं उद्विग्नता **सरल स्तर के प्रश्न**

1. प्रश्न: मनुष्य की जीवनी शक्ति दिनोंदिन क्यों घट रही है?

उत्तर: कोलाहल, प्रदूषण, गंदगी और बीमारियों जैसी विपत्तियों से घिरे रहने के कारण मनुष्य की जीवनी शक्ति दिनोंदिन घट रही है।

2. प्रश्न: लोग अपनी शारीरिक और मानसिक कमजोरियों को छिपाने के लिए क्या उपाय कर रहे हैं?

उत्तर: लोग अपनी दुर्बलता से उत्पन्न कुरूपता और मानसिक विकृतियों को छिपाने के लिए सज-धज और बढ़ते हुए श्रृंगार का सहारा ले रहे हैं।

3. प्रश्न: बढ़ते श्रृंगार की आँधी मनुष्य के लिए किस प्रकार का नया संकट खड़ा कर रही है?

उत्तर: बढ़ते श्रृंगार की आँधी मनुष्य को विलासी, आलसी, खर्चीला और अहंकारी बनाकर एक नए तरह का संकट खड़ा कर रही है।

4. प्रश्न: आज के समय में हर कोई बेचैन क्यों है?

उत्तर: आज के समय में हर कोई अधिक से अधिक समृद्धि बटोरने के लिए बेचैन है।

5. प्रश्न: लोग बिना योग्यता और मेहनत के जल्दी-जल्दी सब कुछ कैसे पाना चाहते हैं?

उत्तर: लोग बिना योग्यता, प्रामाणिकता और पुरुषार्थ के, मुफ्त में या घर बैठे जल्दी-जल्दी अनाप-शनाप पाने के लिए अनाचार का सहारा लेते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "चमकीले आवरणों का छद्म उघाड़ कर देखा जाए, तो प्रतीत होता है कि इन शताब्दियों में मनुष्य ने जो पाया है, उसकी तुलना में खोया कहीं अधिक है।" - इस कथन के माध्यम से लेखक क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इस कथन से लेखक यह समझाना चाहते हैं कि बाहरी तौर पर भले ही हमने भौतिक सुविधाएँ प्राप्त कर ली हैं, लेकिन इस प्रगति की कीमत हमने अपनी जीवनी शक्ति, शालीनता, पारस्परिक विश्वास और स्नेह-सद्भाव जैसे अमूल्य गुणों को खोकर चुकाई है। इसलिए, जो लाभ दिख रहा है, वह सतही है और वास्तविक नुकसान कहीं अधिक गहरा है।

2. प्रश्न: सम्पन्न बनने की अत्यधिक इच्छा मनुष्य के दुर्गुणों को कैसे बढ़ाती है?

उत्तर: सम्पन्न बनने की अत्यधिक इच्छा (तृष्णा) मनुष्य को अनाचार और गलत रास्ते अपनाने के लिए प्रेरित करती है, क्योंकि वह बिना मेहनत के सब कुछ पाना चाहता है। इस प्रक्रिया में वह अपने नैतिक मूल्यों को खो देता है, जिससे पारस्परिक विश्वास और स्नेह-सद्भाव समाप्त हो जाता है और मनुष्य अनेकानेक दुर्गुणों से ग्रस्त हो जाता है।

3. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, मनुष्य की वर्तमान स्थिति की तुलना "मरघट जैसी नीरवता के बीच रहते भूत पत्नीतों" से क्यों की गई है?

उत्तर: यह तुलना इसलिए की गई है क्योंकि बाहरी सुविधाओं के बावजूद, मनुष्य आंतरिक रूप से खोखला, डरा हुआ और अशांत है। जैसे भूत-प्रेत बिना वास्तविक जीवन के केवल एक डरावने अस्तित्व में रहते हैं, वैसे ही आज का मनुष्य भी स्नेह, सद्भाव और आंतरिक शांति के बिना एक भय और बेचैनी से भरी जिंदगी जी रहा है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक "अस्त-व्यस्तता और अनगढ़ता" द्वारा "प्रगतिशील उपलब्धियों पर कब्जा" करने की बात क्यों कहते हैं? इस विरोधाभास का आधुनिक समाज पर क्या प्रभाव पड़ रहा है?

उत्तर: लेखक यह विरोधाभास प्रस्तुत कर रहे हैं कि हमने जो भी वैज्ञानिक और भौतिक प्रगति की है, उसका लाभ समाज को व्यवस्थित और सुसंस्कृत बनाने में नहीं मिला। इसके बजाय, उस प्रगति ने अहंकार को जन्म दिया, जिसने शाश्वत मानवीय मूल्यों (जैसे शालीनता, विश्वास) का तिरस्कार कर दिया। इसका प्रभाव यह है

कि समाज बाहर से प्रगतिशील दिखता है, पर भीतर से पूरी तरह अव्यवस्थित और बिखरा हुआ है। लोगों में बेचैनी, उद्विग्नता और मानसिक दरिद्रता बढ़ गई है, जिससे विस्तृत वैभव भी शांति देने के बजाय बेचैनी का कारण बन रहा है।

2. प्रश्न: क्या आधुनिक समृद्धि और मानसिक शांति एक साथ संभव हैं? अध्याय में प्रस्तुत तर्कों के आधार पर विश्लेषण करें।

उत्तर: अध्याय के तर्कों के अनुसार, जिस तरह से आधुनिक समृद्धि प्राप्त की जा रही है, उस तरीके से मानसिक शांति संभव नहीं है। इसका कारण यह है कि यह समृद्धि योग्यता और पुरुषार्थ पर नहीं, बल्कि "अनाचार" और दूसरों से अधिक पाने की "तृष्णा" पर आधारित है। यह मानसिकता पारस्परिक विश्वास और स्नेह-सद्भाव को नष्ट कर देती है, जो मानसिक शांति के लिए आवश्यक हैं। जब तक समृद्धि का लक्ष्य केवल भौतिक संग्रह रहेगा और उसके लिए अपनाए गए साधन अनैतिक होंगे, तब तक मनुष्य आंतरिक रूप से बेचैन, चिंतित और असंतुष्ट ही रहेगा, भले ही उसके पास कितना भी वैभव क्यों न हो।

अध्याय 5: वास्तविकता, जिसे कैसे नकारा जाए?

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विश्व के आधे प्रतिभाशाली लोग किस काम में लगे हुए हैं?

उत्तर: विश्व के आधे प्रतिभाशाली लोग युद्ध के उद्देश्यों को पूरा करने वाले उद्योगों में लगे हुए हैं।

2. प्रश्न: यदि युद्ध में परमाणु हथियारों का उपयोग हुआ, तो उसका क्या परिणाम होगा?

उत्तर: यदि युद्ध में परमाणु हथियारों का उपयोग हुआ, तो धरती पर महाविनाश हो जाएगा और यहाँ जीवन नाम की कोई वस्तु शेष नहीं रहेगी।

3. प्रश्न: यदि युद्ध नहीं होता है, तो युद्ध के लिए बनाए गए हथियारों और लगी हुई शक्ति का क्या होगा?

उत्तर: यदि युद्ध नहीं होता है, तो यह एक नया संकट खड़ा करेगा कि जो उत्पादन हो चुका है, उसका क्या किया जाए और इस कार्य में लगी हुई जन-शक्ति, धन-शक्ति और साधन-शक्ति को नए क्रम में कैसे लगाया जाए।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार, सबसे भयंकर चीज क्या है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, सबसे भयंकर मनुष्य का उल्टा चिंतन, संकीर्ण स्वार्थपरता से भरा हुआ मानस, और उसका आलसी, विलासी तथा अनाचारी स्वभाव है।

5. प्रश्न: वर्तमान परिस्थितियों ने जनसमुदाय को कैसा बना दिया है?

उत्तर: वर्तमान परिस्थितियों ने जनसमुदाय को शारीरिक दृष्टि से रोगी, अभावग्रस्त, चिंतित, असहिष्णु और कातर-आतुर बनाकर रख दिया है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक "युद्ध हो या न हो, दोनों ही स्थितियों में संकट है" - ऐसा क्यों कहते हैं?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि दोनों ही स्थितियों में मानवता का भारी नुकसान है। यदि युद्ध होता है, तो परमाणु हथियारों से महाविनाश निश्चित है। और यदि युद्ध नहीं होता है, तो युद्ध की तैयारी में लगी अपार जन-शक्ति, धन-शक्ति और साधन-शक्ति व्यर्थ हो जाएगी और उसे रचनात्मक कार्यों में लगाना एक असंभव जैसी विकट समस्या होगी। इस प्रकार, मानवता अपनी प्रतिभा और संसाधनों को विनाश की तैयारी में लगाकर हर हाल में हार रही है।

2. प्रश्न: मनुष्य ऊपरी तौर पर देवताओं जैसा आवरण ओढ़ने के बावजूद, भीतरी तौर पर "प्रेत-पिशाच" स्तर का कैसे बन गया है?

उत्तर: मनुष्य का बाहरी आवरण सभ्य और सुसंस्कृत दिख सकता है, लेकिन उसका भीतरी चिंतन उल्टा, संकीर्ण स्वार्थ से भरा, आलसी और अनाचारी हो गया है। इन्हीं आंतरिक दुर्गुणों के कारण वह दूसरों का शोषण करने और अहंकार प्रदर्शन करने में लगा है। इन्हीं विनाशकारी प्रवृत्तियों के कारण, भले ही वह बाहर से कितना भी अच्छा दिखने का प्रयास करे, उसकी वास्तविक प्रकृति प्रेत-पिशाच जैसी हो गई है।

3. प्रश्न: "इस चिंता से हर विचारशील का किंकर्तव्यविमूढ़ होना स्वाभाविक है।" - यहाँ किस चिंता की बात हो रही है और इससे किंकर्तव्यविमूढ़ता की स्थिति क्यों उत्पन्न होती है?

उत्तर: यहाँ चिंता इस बात की है कि मनुष्य का चिंतन और स्वभाव पूरी तरह से नकारात्मक हो चुका है और समाज हर तरफ से रोगी, अभावग्रस्त और असहिष्णु हो गया है। इस गहरी समस्या का समापन या समाधान कैसे होगा, यह सूझ नहीं पड़ रहा है। जब कोई विचारशील व्यक्ति भविष्य के बारे में सोचता है, तो उसे कोई रास्ता नहीं दिखता, जिससे वह "क्या करें, क्या न करें" की स्थिति में यानी किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय में वर्णित "वास्तविकता" क्या है जिसे नकारा नहीं जा सकता? यह वास्तविकता मानव समाज के भविष्य के लिए क्या संकेत देती है?

उत्तर: वह "वास्तविकता" यह है कि मानव समाज ने अपनी प्रतिभा, संसाधन और ऊर्जा को सृजन के बजाय विनाश की तैयारी में झोंक दिया है। यह केवल बाहरी संकट (जैसे परमाणु युद्ध) तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका मूल मनुष्य के उल्टे चिंतन, संकीर्ण स्वार्थ और अनाचारी स्वभाव में है। यह वास्तविकता भविष्य के लिए एक अत्यंत अंधकारमय संकेत देती है। यह बताती है कि यदि मनुष्य की आंतरिक सोच नहीं बदली, तो चाहे युद्ध हो या न हो, समाज का पतन निश्चित है, क्योंकि वह शारीरिक और मानसिक रूप से पहले ही रोगी और खोखला हो चुका है।

2. प्रश्न: क्या प्रौद्योगिकी (जैसे परमाणु हथियार) स्वयं एक समस्या है, या समस्या उसके पीछे के मानवीय इरादे में निहित है? इस अध्याय के आधार पर तर्क दीजिए।

उत्तर: इस अध्याय के अनुसार, असली समस्या प्रौद्योगिकी में नहीं, बल्कि उसके पीछे के मानवीय इरादे में है। लेखक स्पष्ट रूप से "मनुष्य का उल्टा चिन्तन, संकीर्ण स्वार्थपरता से बेतरह भरा हुआ मानस, आलसी, विलासी और अनाचारी स्वभाव" को सबसे भयंकर बताते हैं। परमाणु हथियार या युद्ध उद्योग केवल इस उल्टे चिन्तन के बाहरी लक्षण हैं। यदि मनुष्य का इरादा रचनात्मक होता, तो वही प्रतिभाशाली लोग, पूँजी और संसाधन सृजन कार्यों में लगे होते। अतः, प्रौद्योगिकी तो एक साधन मात्र है; उसका विनाशकारी या सृजनात्मक होना पूरी तरह से मनुष्य की सोच और इरादे पर निर्भर करता है।

अध्याय 6: सदुपयोग बन पड़े, तो परिवर्तन सम्भव

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: मनुष्य को "अनन्त शक्तियों का भण्डार" क्यों कहा गया है?

उत्तर: मनुष्य को अनन्त शक्तियों का भण्डार इसलिए कहा गया है क्योंकि उसकी बहुत थोड़ी शक्ति ही शारीरिक कार्यों में खर्च होती है और बाकी शक्ति सुप्त अवस्था में पड़ी रहती है।

2. प्रश्न: जब मनुष्य का उत्साह उभरता है, तो क्या चमत्कार दिखाई देते हैं?

उत्तर: जब मनुष्य का उत्साह उभरता है, तो उसकी तत्परता, लगन और स्फूर्ति जैसे गुण चमत्कार दिखाने लगते हैं और वह साधारण परिस्थितियों में भी आश्चर्यजनक कार्य कर दिखाता है।

3. प्रश्न: पिछली तीन सदियों को लेखक ने "आत्म जाग्रति का समय" क्यों कहा है?

उत्तर: लेखक ने पिछली तीन सदियों को "आत्म जाग्रति का समय" इसलिए कहा है क्योंकि इस दौरान मनुष्य की शक्ति भौतिक प्रगति और अन्वेषणों की दिशा में लगी, जिससे असाधारण परिणाम सामने आए।

4. प्रश्न: भौतिकवाद और प्रत्यक्षवाद ने संसार को कैसे प्रभावित किया?

उत्तर: भौतिकवाद और प्रत्यक्षवाद ने संसार के जन-जन को प्रभावित किया, आविष्कारों से सुविधा-साधनों के ढेर लगा दिए और बुद्धिमत्ता के नाम पर इतनी जानकारीयाँ एकत्रित कर दीं जो किसी को भी अहंकारी बना सकती थीं।

5. प्रश्न: मनुष्य की प्रतिभा का प्रयोग न होने पर उसकी तुलना किससे की गई है?

उत्तर: प्रतिभा के अंग-प्रत्यंगों का प्रयोग न होने पर मनुष्य की तुलना कोल्हू के बैल से की गई है, जो किसी तरह बस अपनी जिंदगी के दिन काटता है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, भौतिक प्रगति ने मनुष्य के अहंकार को कैसे बढ़ावा दिया?

उत्तर: भौतिक प्रगति से हुए आविष्कारों और एकत्रित की गई जानकारीयों ने मनुष्य को यह भ्रम दिया कि वह सब कुछ जानता और कर सकता है। इस ज्ञान और सुविधा-साधनों के अम्बार ने उसे अहंकारी बना दिया, क्योंकि उसे अपनी उपलब्धियों पर अत्यधिक गर्व होने लगा।

2. प्रश्न: लेखक यह क्यों कहते हैं कि पिछली तीन सदियों की आत्म-जाग्रति "भौतिक प्रयोजन के पक्ष में ही सीमित" रही? इसके क्या परिणाम हुए?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि इस काल में मनुष्य की समस्त शक्ति और उत्साह केवल भौतिक सुख-सुविधाएँ बढ़ाने, आविष्कार करने और प्रत्यक्ष लाभ प्राप्त करने में ही लगा रहा। इसका परिणाम यह हुआ कि आध्यात्मिक और नैतिक पक्ष की उपेक्षा हो गई, जिससे प्रगति तो हुई, लेकिन वह असंतुलित थी और उसने आगे चलकर संकटों को जन्म दिया।

3. प्रश्न: "शक्ति का जहाँ भी प्रयोग होता है, वह अपना काम करती है।" इस कथन से लेखक क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर: इस कथन से लेखक यह सिद्ध करना चाहते हैं कि मनुष्य की आंतरिक शक्ति (उत्साह, लगन) एक ऊर्जा की तरह है, जिसे जिस भी दिशा में लगाया जाएगा, वह उसी क्षेत्र में परिणाम देगी। पिछली सदियों में इसे भौतिक प्रगति में लगाया गया तो भौतिक चमत्कार हुए। यदि इसी शक्ति को नैतिक और आध्यात्मिक उन्नति में लगाया जाए, तो वहाँ भी असाधारण परिवर्तन संभव है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: यदि मनुष्य "अनन्त शक्तियों का भण्डार" है, तो वह आज इतना असहाय और संकटग्रस्त क्यों है? अध्याय के आधार पर विश्लेषण करें।

उत्तर: अध्याय के अनुसार, मनुष्य के संकटग्रस्त होने का कारण उसकी शक्तियों की कमी नहीं, बल्कि उनका दुरुपयोग या अप्रयोग है। उसकी अधिकांश शक्तियाँ सुप्त पड़ी रहती हैं और वह कोल्हू के बैल की तरह जीवन जीता है। जब उसने अपनी शक्तियों को जगाया भी, तो उसे केवल भौतिक प्रगति और प्रत्यक्षवाद की संकीर्ण दिशा में लगा दिया। इस एकांगी विकास ने उसे अहंकारी बना दिया और दूरदर्शिता के अभाव में उसने उपलब्धियों का सदुपयोग करने के बजाय दुरुपयोग किया, जिससे आज हर दिशा में संकट खड़े हो गए हैं। अतः, शक्तियों का भंडार होते हुए भी, सही दिशा और सदुपयोग के अभाव में वह असहाय है।

2. प्रश्न: "परिवर्तन सम्भव है" - इस विश्वास का आधार क्या है? लेखक के तर्कों के अनुसार, इस परिवर्तन को लाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम क्या होगा?

उत्तर: इस विश्वास का आधार मनुष्य की आंतरिक और अनन्त शक्तियाँ हैं। लेखक तर्क देते हैं कि जब मनुष्य का उत्साह उभरता है, तो वह साधारण परिस्थितियों में भी असाधारण कार्य कर सकता है। चूँकि पिछली सदियों

में भौतिक क्षेत्र में यह कर दिखाया गया है, इसलिए यह सिद्ध है कि मनुष्य में परिवर्तन लाने की क्षमता है। इस परिवर्तन को लाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण कदम है **शक्ति के उपयोग की दिशा बदलना** - यानी भौतिकवाद और स्वार्थपरता से हटकर उसे सत्प्रयोजनों और दूरदर्शितापूर्ण सदुपयोग की ओर मोड़ना।

अध्याय 7: सदुपयोग बनाम दुरुपयोग

सरल स्तर के प्रश्न

1. **प्रश्न:** स्वार्थपरता और अदूरदर्शिता का मेल होने पर व्यक्ति क्या सोचता है?

उत्तर: स्वार्थपरता और अदूरदर्शिता का मेल होने पर व्यक्ति यही सोचता है कि जो कुछ जितना जल्दी बटोरा जा सके और उससे मौज-मजा किया जा सके, कर लिया जाए।

2. **प्रश्न:** सोने का अंडा देने वाली मुर्गी की कहानी का उदाहरण क्यों दिया गया है?

उत्तर: यह उदाहरण यह समझाने के लिए दिया गया है कि कैसे उतावले और अदूरदर्शी व्यक्ति तत्काल लाभ के लालच में दीर्घकालिक हित का विनाश कर देते हैं, ठीक वैसे ही जैसे उस व्यक्ति ने सारे अंडे एक साथ पाने के लिए मुर्गी को ही मार दिया।

3. **प्रश्न:** एक माचिस की तीली के दुरुपयोग का क्या परिणाम हो सकता है?

उत्तर: एक माचिस की तीली के दुरुपयोग से पूरा गाँव जल जाने जैसा अनर्थ हो सकता है।

4. **प्रश्न:** यदि वैज्ञानिक उपलब्धियों का उपयोग शासकों और धनाढ्यों के हित में न हुआ होता, तो क्या होता?

उत्तर: यदि ऐसा न हुआ होता, तो वैज्ञानिक उपलब्धियाँ जन-साधारण का स्तर बहुत ऊँचा उठा देतीं और हर कहीं खुशहाली होती।

5. **प्रश्न:** मशीनों को छोटे आकार का बनाने से क्या लाभ होता?

उत्तर: मशीनों को छोटे आकार का बनाने से लोगों को कम समय और कम परिश्रम में निर्वाह के साधन जुटाने का अवसर मिलता, और बचे हुए समय का उपयोग वे कला-कौशल और व्यक्तित्व विकास में कर सकते।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. **प्रश्न:** लेखक क्यों कहते हैं कि "प्रगतिशील शताब्दियों में पाया तो बहुत कुछ, पर दूरदर्शिता के अभाव में उसका सदुपयोग न बन पड़ा"?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि विज्ञान और बुद्धिवाद से हमें अपार क्षमताएँ और सुविधाएँ तो मिलीं, लेकिन हमने यह नहीं सोचा कि उनका दीर्घकालिक प्रभाव क्या होगा। हमने तत्काल लाभ और स्वार्थ को प्राथमिकता दी, जिसके कारण अमृत समान उपलब्धियाँ भी दुरुपयोग के कारण विष बन गईं और आज हर तरफ संकट दिखाई दे रहे हैं।

2. **प्रश्न:** सदुपयोग और दुरुपयोग के बीच चयन का आधार क्या है? यह चयन व्यक्ति और समाज के भविष्य

को कैसे निर्धारित करता है?

उत्तर: सदुपयोग और दुरुपयोग के बीच चयन का आधार दूरदर्शिता और स्वार्थपरता है। जब व्यक्ति दूरदर्शी होता है, तो वह उपलब्धियों का सदुपयोग करके अपना और दूसरों का हित करता है। लेकिन जब वह स्वार्थी और अदूरदर्शी होता है, तो वह तत्काल लाभ के लिए दुरुपयोग का रास्ता अपनाता है। यह चयन भविष्य को निर्धारित करता है क्योंकि सदुपयोग से खुशहाली और विकास होता है, जबकि दुरुपयोग से विनाश और संकट उत्पन्न होते हैं।

3. प्रश्न: अध्याय में वर्णित "अमृत भी विष बन जाता है" की अवधारणा को वैज्ञानिक प्रगति के संदर्भ में समझाएँ।

उत्तर: वैज्ञानिक प्रगति अमृत के समान है क्योंकि इससे मानव जीवन को बेहतर बनाने की अपार क्षमता है। लेकिन जब इस प्रगति का उपयोग स्वार्थ, लालच और अदूरदर्शिता के साथ किया जाता है—जैसे हथियार बनाना, प्रदूषण फैलाना, या मशीनों से बेरोजगारी बढ़ाना—तो यही अमृत विष का काम करता है। यह समाज में सुख-शांति लाने के बजाय संकट, विनाश और असमानता पैदा करता है, इस प्रकार एक वरदान अभिशाप में बदल जाता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इस अध्याय के प्रकाश में, क्या आप मानते हैं कि समस्या प्रौद्योगिकी (Technology) में है या उसके पीछे की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में? तर्क सहित उत्तर दें।

उत्तर: इस अध्याय के अनुसार, समस्या प्रौद्योगिकी में नहीं, बल्कि उसके पीछे की सामाजिक-आर्थिक व्यवस्था में है जो स्वार्थपरता और अदूरदर्शिता को बढ़ावा देती है। लेखक स्पष्ट करते हैं कि यदि "शासकों और धनाढ्यों के हित को प्राथमिकता न मिली होती" तो उन्हीं वैज्ञानिक उपलब्धियों से जन-साधारण का भला होता। मशीनों का उपयोग बेरोजगारी बढ़ाने के बजाय लोगों को अधिक खाली समय दे सकता था। इससे सिद्ध होता है कि प्रौद्योगिकी तो एक तटस्थ साधन है; उसका परिणाम इस बात पर निर्भर करता है कि उसे नियंत्रित करने वाली व्यवस्था के मूल्य और प्राथमिकताएँ क्या हैं।

2. प्रश्न: "बचे समय को कला-कौशल में, व्यक्तियों को अधिक सुयोग्य बनाने में लगाया गया होता।" यह एक वैकल्पिक विकास मॉडल की तस्वीर प्रस्तुत करता है। यह मॉडल वर्तमान विकास मॉडल से किन मायनों में भिन्न है और क्यों बेहतर है?

उत्तर: यह वैकल्पिक मॉडल वर्तमान विकास मॉडल से मौलिक रूप से भिन्न है। वर्तमान मॉडल का लक्ष्य अधिकतम उत्पादन और भौतिक लाभ है, भले ही उससे बेरोजगारी और असमानता बढ़े। इसके विपरीत, प्रस्तावित मॉडल का लक्ष्य मानवीय कल्याण और समग्र विकास है। यह मॉडल बेहतर इसलिए है क्योंकि:

◦ यह मानव-केंद्रित है: यह मशीनों को मनुष्य की सहायता के लिए देखता है, न कि उसके स्थान पर काम करने के लिए।

◦ यह समग्र विकास को महत्व देता है: यह केवल आर्थिक निर्वाह पर नहीं, बल्कि बचे हुए समय में कला, कौशल और व्यक्तित्व के विकास पर भी जोर देता है, जिससे जीवन की गुणवत्ता बढ़ती है।

◦ यह समानता और खुशहाली लाता है: इसमें कोई बेकार नहीं रहता और सभी को अपने विकास का अवसर मिलता, जिससे समाज में सच्ची खुशहाली होती।

अध्याय 8: सुनियोजन की सही परिणति

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: यदि बुद्धिमत्ता शहरों की जगह गाँवों के विकास में लगी होती, तो क्या परिणाम होता?

उत्तर: यदि ऐसा होता, तो सर्वत्र छोटे-छोटे, स्वावलंबी और फलते-फूलते कस्बे दिखाई पड़ते। शहरों को गंदगी और विकृतियों का भार नहीं सहना पड़ता और गाँवों से प्रतिभा का पलायन भी रुक जाता।

2. प्रश्न: युद्धों को रोकने के लिए क्या व्यवस्था सुझाई गई है?

उत्तर: यह व्यवस्था सुझाई गई है कि युद्धों को अपराध घोषित किया जाए और अंतर्राष्ट्रीय पंचायतें विवादों को सुलझाएँ। हथियार केवल पुलिस या इन पंचायतों के पास सीमित मात्रा में रहें।

3. प्रश्न: युद्ध में लगने वाली जनशक्ति और धनशक्ति का सृजन कार्यों में उपयोग करने से क्या हो सकता था?

उत्तर: यदि इस शक्ति का उपयोग शिक्षा, उद्योग और वृक्षारोपण जैसे सृजन कार्यों में किया जाता, तो अद्भुत और असाधारण स्तर की प्रगति हासिल की जा सकती थी।

4. प्रश्न: शिक्षा का उद्देश्य केवल अफसर या क्लर्क बनना न होकर क्या होना चाहिए था?

उत्तर: शिक्षा का उद्देश्य जन-जीवन और समाज व्यवस्था की व्यावहारिक समस्याओं का समाधान करना होना चाहिए था, जिससे सभी शिक्षित, सभ्य और सुसंस्कृत बनते।

5. प्रश्न: प्रेस और फिल्म जैसी शक्तियों का सदुपयोग कैसे किया जा सकता था?

उत्तर: यदि प्रेस और फिल्म के लिए यह अनुशासन होता कि वे केवल उपयोगी और मान्यता प्राप्त विचारधारा को ही प्रस्तुत करेंगे, तो उनसे मनुष्य को सुविज्ञ और सुसंस्कृत बनाने का महान कार्य संपन्न हो सकता था।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "सुनियोजन" (Well-planned) का क्या अर्थ है? अध्याय में दिए गए उदाहरणों के माध्यम से समझाएँ कि कैसे सुनियोजन के अभाव ने प्रगति को विनाश में बदल दिया।

उत्तर: "सुनियोजन" का अर्थ है दूरदर्शिता के साथ ऐसी योजना बनाना जिसका लक्ष्य समग्र मानव कल्याण हो। सुनियोजन के अभाव ने प्रगति को विनाश में बदल दिया। उदाहरण के लिए:

- **शहरीकरण:** बिना सोचे-समझे बड़े शहर बसाए गए, जिससे गाँव उजड़ गए और शहर नरक बन गए।
- **सैन्य शक्ति:** विवाद सुलझाने की व्यवस्था बनाने के बजाय, विशाल धन और प्रतिभा युद्ध सामग्री बनाने में लगा दी गई।

- **शिक्षा:** शिक्षा को व्यावहारिक जीवन और चरित्र निर्माण से जोड़ने के बजाय केवल नौकरी पाने का साधन बना दिया गया, जिससे समाज में बेकारी और असभ्यता बढ़ी।

2. प्रश्न: प्रतिभा पलायन (Brain Drain) की समस्या को अध्याय में कैसे प्रस्तुत किया गया है और इसका क्या समाधान सुझाया गया है?

उत्तर: प्रतिभा पलायन की समस्या को "गाँवों से प्रतिभा पलायन होते जाने" के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिसके कारण गाँव पिछड़ी हुई स्थिति में रहने के लिए मजबूर हो गए। इसका समाधान यह सुझाया गया है कि विकास की योजनाओं को "ग्रामोन्मुखी" बनाया जाए, जिससे गाँवों में ही विकास और रोजगार के अवसर पैदा हों और वे स्वावलंबी तथा फलते-फूलते कस्बे बनें, ताकि प्रतिभाशाली लोगों को बाहर जाने की जरूरत ही न पड़े।

3. प्रश्न: लेखक के अनुसार, अशिक्षा की समस्या का समाधान कब का हो गया होता? यह समाधान वर्तमान शिक्षा प्रणाली की किस कमी की ओर इशारा करता है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, अशिक्षा की समस्या का समाधान हो गया होता यदि हर शिक्षित व्यक्ति को बड़ी नियुक्ति पाने से पहले दो अशिक्षितों को साक्षर बनाने की शर्त पूरी करनी पड़ती। यह समाधान वर्तमान शिक्षा प्रणाली की इस कमी की ओर इशारा करता है कि वह केवल व्यक्तिगत सफलता पर केंद्रित है और उसमें सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना का अभाव है। शिक्षा को समाज सेवा से नहीं जोड़ा गया है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: यह अध्याय विकास के एक ऐसे मॉडल की कल्पना करता है जो केंद्रीकरण (Centralization) के बजाय विकेंद्रीकरण (Decentralization) पर आधारित है। इस कथन की पुष्टि अध्याय से उदाहरण देकर करें और बताएं कि यह विकेंद्रीकृत मॉडल क्यों बेहतर होता।

उत्तर: यह अध्याय स्पष्ट रूप से एक विकेंद्रीकृत विकास मॉडल का समर्थन करता है। इसके उदाहरण हैं:

- **बड़े शहरों के बजाय छोटे स्वावलंबी कस्बे:** यह आर्थिक और प्रशासनिक शक्ति के विकेंद्रीकरण का प्रतीक है।
- **अंतर्राष्ट्रीय सेना के बजाय अंतर्राष्ट्रीय पंचायतें:** यह सैन्य शक्ति के विकेंद्रीकरण और विवाद समाधान पर जोर देता है।
- **छोटे आकार की मशीनें और गृह उद्योग (अध्याय 7 के संदर्भ में):** यह उत्पादन के साधनों के विकेंद्रीकरण

को दर्शाता है। यह मॉडल बेहतर होता क्योंकि इससे प्रतिभा पलायन रुकता, गाँवों और शहरों के बीच संतुलन बनता, स्थानीय स्तर पर रोजगार पैदा होता, और शक्ति कुछ हाथों में केंद्रित होने के बजाय पूरे समाज में वितरित होती, जिससे अधिक समानता और स्थिरता आती।

2. प्रश्न: अध्याय में वर्णित "सुनियोजन की सही परिणति" के उदाहरणों को देखकर, क्या यह कहा जा सकता है कि लेखक की दृष्टि में सच्ची प्रगति का माप केवल भौतिक विकास नहीं, बल्कि नैतिक और सामाजिक विकास है? अपने उत्तर के पक्ष में तर्क दें।

उत्तर: हाँ, यह बिल्कुल कहा जा सकता है। लेखक की दृष्टि में सच्ची प्रगति का माप नैतिक और सामाजिक विकास है। इसके तर्क निम्नलिखित हैं:

- **शिक्षा का लक्ष्य:** वे शिक्षा का लक्ष्य क्लर्क बनना नहीं, बल्कि व्यक्ति को "सभ्य, सुसंस्कृत" बनाना मानते हैं, जो एक नैतिक लक्ष्य है।

- **युद्ध का विरोध:** वे सैन्य शक्ति को सृजन कार्यों में लगाने की बात करते हैं, जो शांति और सहयोग जैसे सामाजिक मूल्यों को प्राथमिकता देता है।

- **मीडिया की भूमिका:** वे प्रेस और फिल्म की भूमिका मनोरंजन नहीं, बल्कि जनमानस को "सुविज्ञ और सुसंस्कृत" बनाने में देखते हैं, जो एक सामाजिक और नैतिक जिम्मेदारी है। इन सभी उदाहरणों से स्पष्ट है कि लेखक के लिए भौतिक उपलब्धियाँ तभी सार्थक हैं जब वे एक न्यायपूर्ण, समान, सुसंस्कृत और नैतिक रूप से उन्नत समाज का निर्माण करें।

अध्याय 9: समाधान इस प्रकार भी सम्भव था सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: बुद्धि के धनी लोगों को एक प्रकार का क्या कहा गया है?

उत्तर: बुद्धि के धनी लोगों को एक प्रकार का वैज्ञानिक कहा गया है, क्योंकि शासन और समाज के तंत्र उन्हीं के संकेतों से चलते हैं।

2. प्रश्न: यदि समाज में सभी को औसत नागरिक स्तर का जीवन जीने की ही छूट होती तो क्या होता?

उत्तर: तो समाज में अत्यधिक गरीबी दिखाई नहीं देती, सब समानता और एकता का जीवन जी रहे होते, और ऊँच-नीच (खाइयाँ और टीले) का भेद नहीं होता।

3. प्रश्न: नशेबाजी और दुर्व्यसनों के प्रचलन का मूल कारण क्या बताया गया है?

उत्तर: इसका मूल कारण यह है कि इन्हें करने की छूट मिली हुई है; यदि इन पर प्रतिबंध होता और करने वालों को दंडित किया जाता, तो लोग इन्हें नहीं अपनाते।

4. प्रश्न: खर्चीली शादियाँ हमें दरिद्र और बेईमान बनाने का प्रमुख कारण क्यों बनी हुई हैं?

उत्तर: क्योंकि कामुकता भड़काने वाली प्रवृत्तियाँ, बनाव-श्रृंगार और शान-शौकत फैशन का अंग बन गई हैं, जिससे इन अपव्ययों का विरोध नहीं होता और लोग कर्ज लेकर या गलत तरीकों से पैसा कमाकर इन पर खर्च करते हैं।

5. प्रश्न: लेखक ने "चतुरता के नाम पर मूर्खता" अपनाने की बात क्यों कही है?

उत्तर: क्योंकि बाहरी ठाट-बाट और चकाचौंध को पाने के चक्कर में मनुष्य आंतरिक रूप से पूरी तरह खोखला हो गया है और उसे कहीं भी शांति या संतोष नहीं मिल रहा है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, यदि बुद्धिवाद का सही उपयोग होता तो वह समाज की किन-किन समस्याओं का समाधान कर सकता था?

उत्तर: यदि बुद्धिवाद का सही उपयोग होता तो वह खर्चीली शादियों, नशेबाजी, कामुकता भड़काने वाले फैशन और आभूषणों पर धन की बर्बादी जैसे अपव्ययों की हानियाँ लोगों को समझाता। इससे समाज में समानता आती, लोग दरिद्र और बेईमान बनने से बचते, और शारीरिक व मानसिक रूप से अधिक संतुलित जीवन जीते।

2. प्रश्न: "ऊपर चढ़ना धीमी गति से ही सम्भव हो पाता है, पर यदि पतन के गर्त में गिरना हो तो क्षणों में बहुत नीचे पहुँचा जा सकता है।" - इस कथन का पिछली कुछ सदियों की प्रगति के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि सच्चा विकास (ऊपर चढ़ना) जिसमें नैतिक और सामाजिक मूल्य शामिल होते हैं, धीरे-धीरे होता है। लेकिन पिछली सदियों में, भौतिक प्रगति की अंधी दौड़ में हमने नैतिक मूल्यों को तेजी से त्याग दिया (पतन के गर्त में गिरना), जिससे हम बाहरी रूप से अमीर दिखते हुए भी आंतरिक रूप से खोखले हो गए। हमने ठाट-बाट तो जल्दी पा लिया, लेकिन शांति और संतोष खो दिया।

3. प्रश्न: समाज में अपराध और अनाचार को रोकने के लिए लेखक क्या मौलिक समाधान सुझाते हैं?

उत्तर: लेखक यह मौलिक समाधान सुझाते हैं कि बुद्धिजीवियों और शासकों द्वारा सामाजिक कुरीतियों और व्यक्तिगत अनाचारों के विरुद्ध ऐसी मजबूत "बाड़" (नियम और व्यवस्था) बनाई जानी चाहिए थी, जो गलत काम करने का अवसर ही न दे। यदि ऐसा होता तो जो शक्ति आज बर्बादी में लग रही है, वह अच्छे कामों में लगती और अपराध कहीं दिखाई भी नहीं देता।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इस अध्याय में वर्णित "समाधान" केवल कानूनों में बदलाव की बात करते हैं या एक गहरी वैचारिक क्रांति की ओर संकेत करते हैं? अपने उत्तर का विश्लेषण करें।

उत्तर: ये "समाधान" केवल कानूनों में बदलाव से कहीं गहरे, एक वैचारिक क्रांति की ओर संकेत करते हैं।

लेखक का मानना है कि यदि "बढ़ा हुआ बुद्धिवाद" इन अपव्ययों का विरोध करता और उनकी हानियाँ लोगों के "गले उतारता" तो खर्चीली शादियाँ जैसी कुरीतियाँ खत्म हो जातीं। इसका अर्थ है कि समस्या केवल कानून का अभाव नहीं, बल्कि समाज की सोच और मूल्यों का गलत दिशा में जाना है। इसलिए, समाधान के लिए ऐसी वैचारिक क्रांति आवश्यक है जो लोगों की प्राथमिकताओं को ठाट-बाट से हटाकर सादगी और समानता की ओर मोड़े।

2. प्रश्न: लेखक कहते हैं कि "मानसिक दरिद्रता के रहते विस्तृत वैभव, बेचैनी बढ़ने का निमित्त कारण बना हुआ है।" इस विरोधाभास को समझाइए और बताइए कि यह आधुनिक समाज की किस बड़ी विफलता को उजागर करता है?

उत्तर: यह विरोधाभास बताता है कि बाहरी धन-दौलत (विस्तृत वैभव) आंतरिक शांति और संतोष की गारंटी नहीं है। जब व्यक्ति के मन में शांति, संतोष और सही मूल्यों (मानसिक समृद्धि) का अभाव होता है, तो वही बाहरी वैभव उसकी बेचैनी, चिंता और असुरक्षा को और बढ़ा देता है। यह आधुनिक समाज की इस सबसे बड़ी विफलता को उजागर करता है कि उसने भौतिक प्रगति को ही सब कुछ मान लिया और मनुष्य के आंतरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास की पूरी तरह उपेक्षा कर दी, जिसके परिणामस्वरूप आज सुविधाओं के ढेर पर बैठा मनुष्य भी अशांत और दुखी है।

अध्याय 10: निराशा में आशा की झलक

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: निराशा की मानसिकता को एक बड़ा संकट क्यों माना गया है?

उत्तर: निराशा की मानसिकता को एक बड़ा संकट माना गया है क्योंकि इससे मनोबल टूटता है और उत्साह में रुकावट आती है, जिससे व्यक्ति प्रयास करना छोड़ देता है।

2. प्रश्न: मनुष्य का हौसला बुलंद होने पर क्या संभव हो सकता है?

उत्तर: यदि मनुष्य का हौसला बुलंद हो, तो प्रतिकूल परिस्थितियाँ होते हुए भी वह ऐसे आश्चर्यजनक कार्य कर सकता है, जिन्हें देखकर लोग हैरान रह जाएँ।

3. प्रश्न: इतिहास के किन बड़े निर्माण कार्यों का उदाहरण आशावादी साहस के प्रमाण के रूप में दिया गया है?

उत्तर: मिस्र के पिरामिड, पनामा की नहर, स्वेज कैनाल और चीन की विशाल दीवार जैसे निर्माण कार्यों का उदाहरण दिया गया है।

4. प्रश्न: द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश प्रधानमंत्री विंस्टन चर्चिल ने लोगों का मनोबल बढ़ाने के लिए कौन-सा नारा दिया था?

उत्तर: उन्होंने "विक्ट्री" (Victory) का नारा दिया था, जिसका अर्थ था कि जीतना हमें ही है, चाहे शत्रु कितना भी शक्तिशाली क्यों न हो।

5. प्रश्न: हिरोशिमा की त्रासदी के बावजूद जापान ने कैसे उन्नति की?

उत्तर: जापान ने अपना मनोबल नहीं टूटने दिया और सृजन के कार्यों में लगा रहा, जिसके परिणामस्वरूप आज वह विश्व की एक बड़ी आर्थिक शक्ति है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "यह प्रवाह बदल कर उलटे को उलटकर सीधा बनाने की तरह भागीरथी कार्य है, किन्तु असम्भव नहीं, पूर्णतः सम्भव है।" - यहाँ किस प्रवाह को बदलने की बात हो रही है और इसे "भागीरथी कार्य" क्यों कहा गया है?

उत्तर: यहाँ लोगों की निराशावादी और गलत विचारधारा के प्रवाह को बदलकर उसे आशावादी और सही दिशा में मोड़ने की बात हो रही है। इसे "भागीरथी कार्य" इसलिए कहा गया है क्योंकि यह अत्यंत कठिन और विशाल कार्य है, ठीक वैसे ही जैसे भागीरथ स्वर्ग से गंगा को पृथ्वी पर लाए थे। इसके लिए असाधारण साहस और निरंतर प्रयास की आवश्यकता है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, वर्तमान और भविष्य को उज्ज्वल बनाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण शर्त क्या है?

उत्तर: सबसे महत्वपूर्ण शर्त यह है कि लोगों की आस्थाओं और विचारधारा को युग की आवश्यकता के अनुसार सही दिशा में मोड़ा जाए। यदि लोगों का मनोबल ऊँचा हो और वे सही दिशा में सोचने लगे, तो सुखद भविष्य का निर्माण संभव है, भले ही वर्तमान परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल क्यों न हों।

3. प्रश्न: "जब कई व्यक्ति मिलकर एक साथ वजन धकेलते हैं, तो उनकी संयुक्त शक्ति... वह उद्देश्य सम्पन्न कर दिखाती है।" इस उदाहरण से लेखक सामूहिक प्रयास के बारे में क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इस उदाहरण से लेखक समझाना चाहते हैं कि व्यक्तिगत प्रयासों की तुलना में सामूहिक शक्ति कहीं अधिक शक्तिशाली होती है। जब लोग एक समान उद्देश्य के लिए एकजुट होकर, पूरे मनोबल और उत्साह ("हेईशा जैसी जादू भरी हुँकार") के साथ प्रयास करते हैं, तो वे बड़े से बड़े और असंभव लगने वाले कार्य को भी संभव बना सकते हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय में चर्चिल और जापान के उदाहरणों के माध्यम से 'मनोबल' और 'भौतिक संसाधनों' के बीच क्या संबंध दर्शाया गया है? आज के संदर्भ में यह कितना प्रासंगिक है?

उत्तर: इन उदाहरणों से यह दर्शाया गया है कि मनोबल भौतिक संसाधनों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है। युद्ध में हारते हुए ब्रिटेन के पास संसाधन कम हो रहे थे, लेकिन चर्चिल के नारे से बढ़ा हुआ मनोबल उनकी सबसे बड़ी

ताकत बना। इसी प्रकार, परमाणु बम से तबाह हुए जापान के पास भौतिक संसाधन शून्य हो गए थे, लेकिन अटूट मनोबल के दम पर ही वह फिर से खड़ा हुआ और आर्थिक शिखर पर पहुँचा। यह आज भी उतना ही प्रासंगिक है क्योंकि समाज या व्यक्ति चाहे कितनी भी बड़ी आर्थिक या भौतिक चुनौतियों का सामना कर रहा हो, यदि उसका मनोबल और आशावादिता जीवित है, तो वह किसी भी संकट से उबर सकता है।

2. प्रश्न: लेखक का यह विश्वास कि "सुखद भविष्य, का उज्ज्वल परिस्थितियों का प्रादुर्भाव सम्भव न हो सके" इसका कोई कारण नहीं है, किस तर्क पर आधारित है? क्या यह केवल एक भावनात्मक अपील है या इसके पीछे कोई ठोस आधार है?

उत्तर: यह विश्वास केवल एक भावनात्मक अपील नहीं है, बल्कि इसके पीछे ठोस ऐतिहासिक और मनोवैज्ञानिक आधार हैं। लेखक ने इसके लिए कई प्रमाण दिए हैं:

- **ऐतिहासिक प्रमाण:** चीन की दीवार, मिस्र के पिरामिड, ब्रिटेन की वापसी और जापान का पुनर्निर्माण यह सिद्ध करते हैं कि मानव ने अतीत में भी असंभव को संभव किया है।

- **मनोवैज्ञानिक आधार:** लेखक बताते हैं कि निराशा मनोबल तोड़ती है, जबकि आशा और बुलंद हौसला व्यक्ति की छिपी हुई शक्तियों को जगाता है, जिससे वह असाधारण कार्य कर पाता है।

- **सामूहिकता का सिद्धांत:** संयुक्त शक्ति से बड़े लक्ष्य हासिल किए जा सकते हैं। अतः, लेखक का विश्वास इस तर्क पर आधारित है कि चूँकि मनुष्य में असाधारण क्षमताएँ हैं और सामूहिक मनोबल से अतीत में चमत्कार हुए हैं, इसलिए यदि आज भी सही दिशा में प्रयास किया जाए तो भविष्य निश्चित रूप से उज्ज्वल हो सकता है।

अध्याय 11: क्रिया बदलेगी, तो प्रतिक्रिया भी बदलेगी

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "क्रिया की प्रतिक्रिया होना सुनिश्चित है।" इस कथन का क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि हर कार्य का परिणाम निश्चित रूप से होता है; अच्छे कर्म का अच्छा और बुरे कर्म का बुरा।

2. प्रश्न: सतयुग किस काल को कहा गया है और उसकी क्या विशेषता थी?

उत्तर: सतयुग उस काल को कहा गया है जब शक्तियों के सदुपयोग का प्रचलन था। इसकी विशेषता यह थी कि साधारण साधनों के होते हुए भी लोग प्रसन्न रहते थे और सुख-शांति भरे वातावरण में जीवन जीते थे।

3. प्रश्न: कलियुग की क्या विशेषता बताई गई है?

उत्तर: कलियुग की विशेषता यह है कि इसमें प्रचुर साधन होते हुए भी लोग मर्यादाओं का त्याग कर डरती-डराती और जलती-जलाती जिन्दगी जीते हैं।

4. प्रश्न: लेखक के अनुसार, आज की उपलब्धियाँ सतयुग से भी अधिक सुख-शांति क्यों नहीं ला पाईं?

उत्तर: आज की उपलब्धियाँ इसलिए सुख-शांति नहीं ला पाईं क्योंकि विज्ञान और धर्म मिलकर नहीं चले। सदुपयोग और दुरुपयोग की विभाजन रेखा मिटा दी गई, जिससे प्रगति का दुरुपयोग होने लगा।

5. प्रश्न: अपव्ययी (फिजूलखर्ची करने वाले) लोगों को क्या भुगतना पड़ता है?

उत्तर: अपव्ययी लोगों को तंगी भुगतनी पड़ती है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "लिफाफे का कलेवर उघाड़ कर देखा जाता है तो प्रतीत होता है कि भीतर दुर्गन्ध भरे विषाणुओं, जीवाणुओं के अतिरिक्त और कुछ है ही नहीं।" इस रूपक का क्या आशय है?

उत्तर: इस रूपक का आशय है कि आज का समाज बाहरी तौर पर (लिफाफे का कलेवर) बहुत आकर्षक, प्रगतिशील और विलास के साधनों से भरा हुआ दिखता है, जैसे स्वर्ग हो। लेकिन जब उसकी आंतरिक वास्तविकता (भीतर) को देखा जाता है, तो पता चलता है कि वह नैतिक रूप से खोखला है और दुर्गन्ध भरे विषाणुओं की तरह संकटों, शोषण, अहंकार और अविश्वास से भरा हुआ है।

2. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, मनुष्य अपनी बनाई हुई समस्याओं के कुचक्र में कैसे फँस गया है?

उत्तर: मनुष्य अपनी शक्तियों और बुद्धि का दुरुपयोग करके समस्याओं के कुचक्र में फँस गया है। उसने दूसरों का शोषण और अहंकार प्रदर्शन को अपना स्वभाव बना लिया है, जिसकी प्रतिक्रिया में उसे घात-प्रतिघात सहना पड़ता है। सहयोग के स्थान पर संघर्ष उसके जीवन का अंग बन गया है। अब वह एक समस्या का हल ढूँढता है तो दस नई समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं।

3. प्रश्न: घड़ी के पेंडुलम का उदाहरण देकर लेखक क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: घड़ी के पेंडुलम का उदाहरण देकर लेखक यह समझाना चाहते हैं कि हर चीज की एक सीमा होती है। जैसे पेंडुलम एक सिरे तक जाकर वापस लौटता है, वैसे ही जब कोई भी प्रवृत्ति (जैसे अनाचार या भौतिकवाद) अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच जाती है, तो उसका पतन और विपरीत दिशा में लौटना निश्चित होता है। यह एक प्राकृतिक नियम है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "यह विडम्बना, शालीनता के परित्याग का ही प्रतिफल है।" इस कथन का विश्लेषण करें। लेखक के अनुसार, 'शालीनता' का क्या व्यापक अर्थ है और इसके अभाव ने समाज को कैसे प्रभावित किया है?

उत्तर: यह कथन आधुनिक समाज के सबसे बड़े विरोधाभास को उजागर करता है कि अपार भौतिक प्रगति के बावजूद मनुष्य दुखी है। यहाँ 'शालीनता' का अर्थ केवल विनम्र व्यवहार नहीं, बल्कि मर्यादा, नैतिक मूल्य, संयम और शक्तियों का सदुपयोग करना है। इसके अभाव ने समाज को गहराई से प्रभावित किया है। विज्ञान

और बुद्धि का दुरुपयोग होने लगा, धर्म और नैतिकता को पीछे छोड़ दिया गया, जिससे सहयोग की जगह संघर्ष, संतोष की जगह तृष्णा और सुख की जगह अशांति ने ले ली। इस प्रकार, शालीनता के अभाव ने ही अमृत जैसी उपलब्धियों को विष में बदल दिया है।

2. प्रश्न: क्या आज की समस्याओं का समाधान केवल 'क्रिया बदलने' से संभव है, या इसके लिए एक गहरी 'प्रतिक्रिया' की प्रतीक्षा करनी होगी? अध्याय के तर्कों के आधार पर विवेचना करें।

उत्तर: अध्याय के तर्कों के अनुसार, समाधान 'क्रिया बदलने' से ही संभव है, लेकिन यह क्रिया अब एक गहरी 'प्रतिक्रिया' के रूप में प्रकट होगी। लेखक का मानना है कि मनुष्य ने दुरुपयोग की 'क्रिया' करके संकटों को आमंत्रित किया है। अब इस 'अति' की प्रतिक्रिया होना स्वाभाविक है, जैसे विष खाने पर उल्टी होती है। यह प्रतिक्रिया प्रकृति के दंड (बाढ़, भूकंप) और सृष्टि के नियंता द्वारा व्यवस्था के संतुलन के रूप में प्रकट होगी। अतः, मनुष्य को स्वेच्छा से अपनी क्रिया (सोच और कर्म) बदलनी होगी; यदि वह नहीं बदलता है, तो प्रकृति और नियंता की प्रतिक्रिया उसे बदलने पर विवश कर देगी।

अध्याय 12: तेजी से बदलता परोक्ष जगत का प्रवाह

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, हम किस पर बैठे हैं और निकट भविष्य में किसके ग्रास बनने जा रहे हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, हम सब बारूद के ढेर पर बैठे हैं और निकट भविष्य में महाविनाश के ग्रास बनने जा रहे हैं।

2. प्रश्न: प्रकृति मनुष्य द्वारा किए गए बलात्कार पर क्या प्रतिक्रिया दे रही है?

उत्तर: प्रकृति अपने ऊपर किए गए बलात्कार पर उपयुक्त दंड देने और प्रतिशोध लेने पर उतारू हो गई है, जिसके कारण आए दिन दुर्भिक्ष, बाढ़, भूकंप और रोग-शोक जैसी घटनाएँ हो रही हैं।

3. प्रश्न: सूक्ष्म दृष्टि वाले लोग पृथ्वी के बारे में क्या जानते हैं, जो साधारण अनुभव में पता नहीं चलता?

उत्तर: सूक्ष्म दृष्टि वाले लोग जानते हैं कि पृथ्वी केवल स्थिर नहीं है, बल्कि लट्टू की तरह अपनी धुरी पर घूमती है और सूर्य की परिक्रमा भी करती है। इसी प्रकार, वे यह भी जानते हैं कि ऊपरी शांति के नीचे विस्फोटक स्थिति छिपी है।

4. प्रश्न: बढ़ी हुई जनसंख्या और जीवनी शक्ति के क्षय के क्या भविष्यगत परिणाम बताए गए हैं?

उत्तर: भविष्य में बढ़ी हुई जनसंख्या के लिए पृथ्वी पर राह चलना भी मुश्किल हो जाएगा और जीवनी शक्ति खो देने के बाद लोग मक्खी-मच्छरों की तरह बेमौत मरेंगे।

5. प्रश्न: आज की सोच में मनुष्य भविष्य की चिंता क्यों नहीं कर रहा है?

उत्तर: "आज ही सब कुछ पा लेने की सोच" के कारण मनुष्य भविष्य की चिंता किए बिना अपने विनाश को

दाँव पर लगा रहा है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "विकास के नाम पर हम विनाश की दिशा में चले हैं।" इस कथन को अध्याय में दिए गए उदाहरणों से स्पष्ट करें।

उत्तर: यह कथन बताता है कि जिसे हम प्रगति समझ रहे हैं, वह वास्तव में पतन है। इसके उदाहरण हैं:

- प्राकृतिक शोषण: हमने भूमि और खनिज भंडारों का इतना दोहन किया है कि वे चुकने की कगार पर हैं।
- पर्यावरणीय असंतुलन: वायु प्रदूषण और अहंकार जैसे अनाचारों ने प्रकृति को प्रतिशोध लेने पर विवश कर दिया है, जिससे प्राकृतिक आपदाएँ बढ़ रही हैं।
- सामाजिक पतन: सद्भाव और सहयोग के अभाव में लोग प्रेत-पिशाच जैसे बन गए हैं, भले ही उनके पास कितनी भी संपत्ति क्यों न हो।

2. प्रश्न: अध्याय में 'प्रत्यक्ष' और 'परोक्ष' जगत के बीच क्या अंतर बताया गया है और आज की विस्फोटक स्थिति को समझने में यह अंतर क्यों महत्वपूर्ण है?

उत्तर: 'प्रत्यक्ष' जगत वह है जो हमें अपनी साधारण इंद्रियों से दिखाई देता है, जैसे पृथ्वी का स्थिर दिखना या समाज का ऊपरी तौर पर चलता हुआ दिखना। 'परोक्ष' या सूक्ष्म जगत वह वास्तविकता है जो इन ऊपरी सत्यों के नीचे छिपी है, जैसे पृथ्वी का घूमना या समाज का विनाश के कगार पर होना। यह अंतर इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि औसत आदमी केवल प्रत्यक्ष को देखकर सब कुछ सामान्य समझ सकता है, लेकिन जो सूक्ष्म लक्षणों का विश्लेषण कर सकते हैं, वे परोक्ष जगत के प्रवाह को देखकर जानते हैं कि स्थिति वास्तव में विस्फोटक है।

3. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि "वर्तमान भी इतना उलझा हुआ है कि एक समस्या का हल ढूँढते-ढूँढते दस और नई विपन्नताएँ बड़े-चढ़े रूप में सामने आ खड़ी होती हैं"?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि समस्याएँ अब सतही नहीं रहीं, बल्कि व्यवस्था के मूल में चली गई हैं। मनुष्य का चिंतन ही उल्टा हो गया है और समाज में सहयोग के स्थान पर संघर्ष ने ले ली है। इसलिए, जब किसी एक बाहरी लक्षण (समस्या) का समाधान करने की कोशिश की जाती है, तो मूल बीमारी (गलत चिंतन और संघर्ष) के कारण दस नई समस्याएँ पैदा हो जाती हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: क्या इस अध्याय में वर्णित विनाश की तस्वीर नियतिवादी (Fatalistic) है, या यह एक चेतावनी है? लेखक की भाषा और तर्कों के आधार पर विश्लेषण करें।

उत्तर: यह तस्वीर नियतिवादी नहीं, बल्कि एक गंभीर चेतावनी है। यद्यपि लेखक "महाविनाश के ग्रास बनने

जा रहे हैं" जैसी عطا भाषा का प्रयोग करते हैं, उनका उद्देश्य डराकर निष्क्रिय करना नहीं, बल्कि जगाना है। वे स्पष्ट रूप से विनाश के कारण बताते हैं—"विकास के नाम पर हम विनाश की दिशा में चले हैं," "आज ही सब कुछ पा लेने की सोच"। कारण बताने का अर्थ ही यह है कि यदि कारण को हटा दिया जाए, तो परिणाम बदल सकता है। वे इसे "लक्षणों का पर्यवेक्षण" कहते हैं, जो एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण है, न कि भाग्यवादी। अतः, यह एक डॉक्टर की तरह है जो बीमारी के लक्षणों के आधार पर गंभीर परिणाम की चेतावनी देता है ताकि इलाज शुरू किया जा सके।

2. प्रश्न: "माता की तरह पोषण करने वाली प्रकृति अब मरने-मारने पर उतारू हो गई है।" इस पंक्ति में प्रकृति के मानवीकरण का क्या महत्व है? यह मनुष्य और प्रकृति के बदलते संबंध पर क्या टिप्पणी करता है?

उत्तर: प्रकृति का मानवीकरण (उसे 'माता' और फिर 'मरने-मारने पर उतारू' कहना) एक शक्तिशाली साहित्यिक युक्ति है जिसका गहरा महत्व है। यह मनुष्य और प्रकृति के बीच के संबंध को एक व्यक्तिगत और नैतिक धरातल पर ले आता है।

◦ संबंधों का पतन: पहले यह संबंध एक बच्चे और पोषण करने वाली माँ जैसा था, जो प्रेम और निर्भरता पर आधारित था। अब यह एक उत्पीड़क और प्रतिशोध लेने वाले पीड़ित के संबंध में बदल गया है।

◦ नैतिक जिम्मेदारी: यह मनुष्य को याद दिलाता है कि उसने केवल एक संसाधन का शोषण नहीं किया है, बल्कि अपनी ही 'माता' के साथ 'बलात्कार' जैसा नैतिक अपराध किया है।

◦ प्रकृति की सक्रिय भूमिका: यह प्रकृति को एक निष्क्रिय वस्तु के बजाय एक सक्रिय शक्ति के रूप में प्रस्तुत करता है, जो अपने संतुलन को बहाल करने के लिए कदम उठा सकती है। यह इस विचार को बल देता है कि प्रकृति के नियम अटूट हैं और उनका उल्लंघन करने पर परिणाम अवश्यंभावी हैं।

अध्याय 13: सन्तुलन नियन्ता की व्यवस्था का एक क्रम

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इस सृष्टि का नियन्ता कौन है और उसने मनुष्य को क्यों बनाया है?

उत्तर: इस सृष्टि का एक नियन्ता है, जिसने अपनी पूरी कलात्मकता से इस धरती को और उस पर शासन करने के लिए मनुष्य को बनाया है।

2. प्रश्न: नियन्ता विनाश को रोकने के लिए क्या निश्चय कर रहा है?

उत्तर: नियन्ता ने यह निश्चय किया है कि विनाश की अंधी दौड़ को रोक दिया जाए और प्रवाह को संतुलित स्तर पर लाया जाए।

3. प्रश्न: लेखक ने राष्ट्रपति शासन का उदाहरण क्यों दिया है?

उत्तर: यह उदाहरण यह समझाने के लिए दिया गया है कि जब कोई व्यवस्था (शासन) अयोग्य हो जाती है, तो

एक उच्च शक्ति (राष्ट्रपति) हस्तक्षेप करके उसे सुधारती है। ठीक इसी तरह, जब मानवता रूपी व्यवस्था अयोग्य हो गई है, तो नियन्ता हस्तक्षेप कर रहा है।

4. प्रश्न: रावण, कंस और हिरण्यकश्यपु जैसे असुरों के उदाहरण से क्या समझाया गया है?

उत्तर: इन उदाहरणों से यह समझाया गया है कि हर बुरी शक्ति की एक सीमा होती है। वे तेजी से उभरते हैं, लेकिन उसी गति से उनका अंत भी हो जाता है, क्योंकि व्यवस्था उन्हें हमेशा सहन नहीं करती।

5. प्रश्न: तूफान जिस दिशा में मुड़ता है, वह क्या परिचय देता है?

उत्तर: तूफान जिस भी दिशा में मुड़ता है, उसी में अपनी प्रचंडता का परिचय देता चलता है। इसका आशय है कि अब सुधार का क्रम भी तूफानी गति से होगा।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "बच्चों को एक सीमा तक ही मस्ती करने की छूट दी जाती है।" इस उपमा के माध्यम से लेखक नियन्ता और मनुष्य के संबंध को कैसे दर्शाते हैं?

उत्तर: इस उपमा के माध्यम से लेखक नियन्ता को एक अभिभावक और मनुष्य को एक बच्चे के रूप में दर्शाते हैं। जैसे अभिभावक अपने बच्चे को प्रेमवश खेलने और गलतियाँ करने की छूट देते हैं, वैसे ही नियन्ता ने मनुष्य को स्वतंत्रता दी। लेकिन जब बच्चा कीमती चीजों को तोड़ने (विनाश करने) लगता है, तो वही अभिभावक उसे दंडित भी करता है। इसी प्रकार, जब मनुष्य सृष्टि का विनाश करने पर तुल गया है, तो नियन्ता भी अब उसे रोकने और सुधारने के लिए हस्तक्षेप कर रहा है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, परिवर्तन की प्रक्रिया में दृश्य और अदृश्य शक्तियों की क्या भूमिका है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, परिवर्तन केवल मनुष्यों के बाहरी प्रयासों से नहीं होता। इसके पीछे अदृश्य शक्तियों की भी महत्वपूर्ण भूमिका होती है, जो व्यापक वातावरण पर नियंत्रण करती हैं। ये शक्तियाँ अवांछनीय प्रचलनों को उलटने और नए मूल्यों की स्थापना के लिए अपने क्षेत्र में चमत्कार दिखाने पर तुल गई हैं। यह परिवर्तन पहले अदृश्य जगत में शुरू होता है और फिर मनुष्यों के विचारों और कार्यों के माध्यम से दृश्य जगत में प्रकट होता है।

3. प्रश्न: समय की गति तेज हो जाने का क्या अर्थ है और इसका भविष्य के सुधार-क्रम से क्या संबंध है?

उत्तर: समय की गति तेज हो जाने का अर्थ है कि मनुष्य के प्रचंड पुरुषार्थ के कारण अब परिवर्तन बहुत तेजी से होते हैं। जो बदलाव पहले सदियों में होते थे, वे अब कुछ दशकों में हो जाते हैं। इसका भविष्य के सुधार-क्रम से गहरा संबंध है। जैसे विनाश का क्रम बहुत तेज रहा है, वैसे ही अब सुधार का क्रम भी तूफानी गति से होगा। परिवर्तन का चक्र अब छोटा हो गया है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: क्या इस अध्याय में वर्णित 'नियन्ता' की अवधारणा मनुष्य को अपनी जिम्मेदारी से मुक्त करती है? तर्क सहित विश्लेषण करें।

उत्तर: नहीं, 'नियन्ता' की अवधारणा मनुष्य को उसकी जिम्मेदारी से मुक्त नहीं करती, बल्कि उसे एक बड़े परिप्रेक्ष्य में रखती है। लेखक यह नहीं कहते कि मनुष्य को कुछ नहीं करना है और नियन्ता सब कुछ कर देगा। बल्कि, वे कहते हैं कि नियन्ता की प्रेरणा से मनुष्य के "मूर्धन्य क्षेत्रों में" नया सोच आरम्भ हो रहा है और वह स्वयं गतिविधियों के नए निर्धारण की योजनाएँ बना रहा है। नियन्ता एक उच्च स्तरीय नियंत्रण (जैसे राष्ट्रपति शासन) लागू करता है, लेकिन व्यवस्था को चलाने के लिए "सुयोग्यों" को ही आगे लाता है। अतः, नियन्ता केवल एक अनुकूल वातावरण और प्रेरणा प्रदान करता है, लेकिन उस प्रेरणा पर कार्य करने और सुधार लाने की अंतिम जिम्मेदारी मनुष्य की ही है।

2. प्रश्न: अध्याय में अंधकार और उषाकाल के प्राकृतिक चक्र का उपयोग वर्तमान और भविष्य की स्थिति को दर्शाने के लिए कैसे किया गया है? यह रूपक आशावाद का संचार कैसे करता है?

उत्तर: अंधकार और उषाकाल के रूपक का प्रयोग बहुत प्रभावशाली ढंग से किया गया है। वर्तमान की निराशाजनक, विनाशकारी और अव्यवस्थित स्थिति की तुलना "अन्धकार की भयानकता" से की गई है। जैसे प्रकृति अंधकार को अधिक समय तक सहन नहीं करती और ब्रह्म मुहूर्त, उषाकाल और सूर्योदय का क्रम निश्चित रूप से आता है, वैसे ही सृष्टि व्यवस्था भी वर्तमान के नैतिक अंधकार को समाप्त करेगी। यह रूपक गहरा आशावाद जगाता है क्योंकि:

- यह परिवर्तन को प्राकृतिक और अवश्यंभावी बताता है: जैसे रात के बाद दिन का आना निश्चित है, वैसे ही इस बुरे दौर के बाद अच्छे युग का आना भी तय है।

- यह एक स्वतःस्फूर्त प्रक्रिया दर्शाता है: उषाकाल के आने से हलचलें अपने आप शुरू हो जाती हैं—मुरी बोलते हैं, फूल खिलते हैं, पक्षी चहकते हैं। इसी प्रकार, नए युग के आगमन से समाज में सकारात्मकता और सृजनशीलता का संचार स्वतः होगा।

- यह अंधकार को अस्थायी बताता है: यह हमें याद दिलाता है कि चाहे रात कितनी भी काली क्यों न हो, वह स्थायी नहीं है।

अध्याय 14: इक्कीसवीं सदी बनाम उज्ज्वल भविष्य

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युगसन्धि का समय कब से कब तक माना गया है?

उत्तर: युगसन्धि का समय बीसवीं सदी के अंत और इक्कीसवीं सदी के आरम्भ को माना गया है, जिसमें सन्

1989 से 2000 तक के बारह वर्ष मध्यकाल के रूप में विशेष महत्वपूर्ण हैं।

2. प्रश्न: युगसन्धि के समय में किस प्रकार की दो परस्पर विरोधी प्रक्रियाएँ चलती हैं?

उत्तर: इस समय में एक ओर विनाशकारी प्रवृत्तियाँ (अवाँछनीयता) अपना पूरा जोर लगाती हैं और दूसरी ओर सृजन के प्रयास भी पूरी शक्ति से आगे बढ़ते हैं।

3. प्रश्न: प्रसव पीड़ा का उदाहरण देकर क्या समझाया गया है?

उत्तर: यह उदाहरण देकर समझाया गया है कि युगसन्धि के समय में एक ओर विनाश और उथल-पुथल की पीड़ा होती है, तो दूसरी ओर एक नए और उज्ज्वल भविष्य (सन्तान लाभ) के आगमन की प्रसन्नता भी होती है।

4. प्रश्न: युगसन्धि की वेला में अध्यात्म शक्तियों की क्या भूमिका होगी?

उत्तर: अध्यात्म शक्तियाँ अपने तप-उपचार को गतिशील करेंगी, जिससे भगीरथ और दधीचि जैसे महान परिवर्तनों की भूमिका निभाई जा सकेगी।

5. प्रश्न: युगसन्धि के समय में लोक सेवियों का वर्ग कैसी भूमिका निभाएगा?

उत्तर: लोक सेवियों का एक बड़ा वर्ग राम के वानरों, कृष्ण के ग्वाल-बालों और गाँधी के सत्याग्रहियों जैसी भूमिका निभाएगा और एक नए इतिहास की रचना करेगा।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "बुझता हुआ दीपक अधिक ऊँची लौ उभारता है, मरते समय चींटी के पंख उगते हैं।" इन रूपकों का युगसन्धि काल के संदर्भ में क्या अर्थ है?

उत्तर: इन रूपकों का अर्थ है कि अपने अंत के निकट, बुरी और विनाशकारी शक्तियाँ (अवाँछनीयता) और अधिक प्रबल और आक्रामक दिखाई देंगी। जैसे बुझने से ठीक पहले दीपक की लौ तेज हो जाती है, वैसे ही विनाशकारी ताकतें समाप्त होने से पहले अपना सबसे उग्र रूप दिखाएंगी।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, बीसवीं सदी की उपलब्धियों और विभीषिकाओं में क्या अंतर है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, बीसवीं सदी में उपलब्धियाँ कम और विभीषिकाएँ (भयानक संकट) अधिक उभरी हैं। हालाँकि विज्ञान और बुद्धिवाद से प्रगति हुई, लेकिन उसका दुरुपयोग इतना अधिक हुआ कि उसने विनाशकारी संकटों को जन्म दिया।

3. प्रश्न: युगसन्धि के दौरान दृश्यमान और अदृश्य प्रयत्न एक-दूसरे से कैसे संबंधित हैं?

उत्तर: युगसन्धि के दौरान होने वाले दृश्यमान प्रयत्न, जैसे शासन और विज्ञान के क्षेत्र में सुधार, वास्तव में अदृश्य प्रयत्नों की ही बाहरी अभिव्यक्ति या अनुकृति होंगे। इसका अर्थ है कि पहले अदृश्य जगत में आध्यात्मिक शक्तियों द्वारा परिवर्तन की नींव रखी जाएगी, जो बाद में लोक सेवियों और अन्य माध्यमों से समाज में प्रत्यक्ष

रूप से प्रकट होगी।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, क्या इक्कीसवीं सदी का उज्ज्वल भविष्य बिना किसी संघर्ष के प्राप्त हो जाएगा?

"हारे जुआरी की तरह दूने दाँव लगाती देखी जाएगी" इस पंक्ति के आधार पर विश्लेषण करें।

उत्तर: नहीं, अध्याय के अनुसार उज्ज्वल भविष्य बिना संघर्ष के प्राप्त नहीं होगा। "हारे जुआरी की तरह दूने दाँव लगाती देखी जाएगी" यह पंक्ति स्पष्ट करती है कि पुरानी, नकारात्मक और विनाशकारी शक्तियाँ आसानी से हार नहीं मानेंगी। जैसे हारा हुआ जुआरी सब कुछ गँवा देने के डर से और बड़े दाँव लगाता है, वैसे ही ये शक्तियाँ अपने अंत को निकट देखकर और अधिक विनाशकारी और अनर्थकारी प्रयास करेंगी। इसलिए, उज्ज्वल भविष्य की स्थापना एक तीव्र संघर्ष के बाद ही संभव होगी, जिसमें सृजन की शक्तियों को इन विनाशकारी ताकतों पर विजय प्राप्त करनी होगी।

2. प्रश्न: इस अध्याय में "युगसन्धि" की अवधारणा को एक प्राकृतिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया के रूप में कैसे प्रस्तुत किया गया है?

उत्तर: इस अध्याय में "युगसन्धि" को केवल एक समय परिवर्तन के रूप में नहीं, बल्कि एक गहरी प्राकृतिक और आध्यात्मिक प्रक्रिया के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

◦ प्राकृतिक प्रक्रिया: इसकी तुलना प्रातः-सायं की सन्धि बेला और प्रसव पीड़ा से की गई है, जो प्राकृतिक और अनिवार्य चक्र हैं। यह बताता है कि जैसे दिन के बाद रात और पीड़ा के बाद जन्म निश्चित है, वैसे ही इस उथल-पुथल के बाद नए युग का आना भी एक प्राकृतिक नियम है।

◦ आध्यात्मिक प्रक्रिया: इसमें अध्यात्म शक्तियों की सक्रिय भूमिका का उल्लेख है, जो भगीरथ और दधीचि जैसे महान परिवर्तनों का आधार बनती हैं। साथ ही, इसे अदृश्य जगत में होने वाले प्रयत्नों का परिणाम बताया गया है, जो सिद्ध करता है कि यह केवल भौतिक नहीं, बल्कि एक आध्यात्मिक कायापलट है।

अध्याय 15: अदृश्य जगत से सक्रिय परिवर्तन की लहरें

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: दृश्य घटनाओं का आरम्भ कहाँ से होता है?

उत्तर: दृश्य घटनाओं का आरम्भ अदृश्य जगत से होता है।

2. प्रश्न: जीवित रहने के लिए अन्न-जल से भी अधिक महत्वपूर्ण क्या है?

उत्तर: जीवित रहने के लिए अन्न-जल से भी अधिक महत्वपूर्ण साँस (प्राणवायु) है, जो अदृश्य रूप से आकाश में विद्यमान है।

3. प्रश्न: मनुष्य के भले-बुरे कर्म सबसे पहले किस जगत को प्रभावित करते हैं?

उत्तर: मनुष्य के भले-बुरे कर्म सबसे पहले अदृश्य जगत के वातावरण को प्रभावित करते हैं।

4. प्रश्न: प्रगति के क्षेत्र में ऊँची उड़ान भरने के लिए पक्षी के दो पंखों का उदाहरण क्यों दिया गया है?

उत्तर: यह उदाहरण यह समझाने के लिए दिया गया है कि प्रगति के लिए दो प्रकार के प्रयासों की आवश्यकता है: पहला, विकास के लिए प्रत्यक्ष (स्थूल) प्रयास और दूसरा, अध्यात्म उपचार जैसे सूक्ष्म पुरुषार्थ।

5. प्रश्न: दुर्गा का अवतरण और सीता का प्राकट्य किन शक्तियों के संयुक्त प्रयास का परिणाम था?

उत्तर: दुर्गा का अवतरण देवताओं की संयुक्त शक्ति से हुआ था और ऋषियों के रक्त (तप) से सीता का प्राकट्य हुआ था, जो अदृश्य शक्तियों के सहयोग का प्रतीक है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "मनुष्यों की भली-बुरी क्रियाएँ अदृश्य जगत के वातावरण को प्रभावित करती हैं और फिर वहाँ से वे तदनुरूप परिस्थितियाँ बनकर उतरती हैं।" इस प्रक्रिया को समझाएँ।

उत्तर: इस प्रक्रिया का अर्थ है कि हमारे कर्म और विचार केवल भौतिक परिणाम ही नहीं देते, बल्कि वे सूक्ष्म वातावरण में एक ऊर्जा या स्पंदन पैदा करते हैं। यदि कर्म अच्छे हैं, तो अदृश्य जगत में सकारात्मक ऊर्जा एकत्रित होती है, जो बाद में सुखद परिस्थितियों के रूप में हमारे जीवन में वापस आती है। इसी प्रकार, बुरे कर्म नकारात्मक ऊर्जा पैदा करते हैं, जो दुःख और संकट बनकर लौटती है।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, आज की समस्याओं के समाधान के लिए केवल प्रत्यक्ष उपाय (जैसे राजनीतिक या आर्थिक सुधार) पर्याप्त क्यों नहीं हैं?

उत्तर: लेखक के अनुसार, केवल प्रत्यक्ष उपाय इसलिए पर्याप्त नहीं हैं क्योंकि समस्याओं की जड़ अदृश्य जगत में भी है। आज की विपत्तियों का कारण केवल बाहरी अव्यवस्था नहीं, बल्कि मनुष्य के कर्मों द्वारा विषाक्त हुआ सूक्ष्म वातावरण भी है। इसलिए, जब तक अध्यात्म उपचारों द्वारा उस सूक्ष्म वातावरण को शुद्ध नहीं किया जाता, तब तक स्थायी समाधान संभव नहीं है।

3. प्रश्न: स्वाधीनता संग्राम के दिनों में महर्षि अरविन्द और रामकृष्ण परमहंस जैसे संतों के सूक्ष्म पुरुषार्थ का क्या महत्व था?

उत्तर: स्वाधीनता संग्राम के दिनों में इन संतों ने प्रत्यक्ष रूप से आंदोलन में भाग नहीं लिया, लेकिन उन्होंने अपने आध्यात्मिक बल और तप से अदृश्य जगत में स्वतंत्रता के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाया। उनके इस सूक्ष्म पुरुषार्थ ने स्वतंत्रता सेनानियों को नैतिक और आध्यात्मिक बल प्रदान किया और देशव्यापी चेतना को जागृत करने में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई, जो केवल बाहरी प्रयासों से संभव नहीं थी।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "इन दिनों जो हो रहा है, उसका कारण लोक प्रचलन तो है ही, अदृश्य जगत के तूफानी प्रवाह भी

परिस्थितियों को कम प्रभावित नहीं करते।" इस कथन का विश्लेषण करें। यह आज की वैश्विक समस्याओं (जैसे जलवायु परिवर्तन, युद्ध) पर कैसे लागू होता है?

उत्तर: इस कथन का विश्लेषण यह है कि आज की समस्याएँ दो स्तरों पर घटित हो रही हैं। पहला, 'लोक प्रचलन' यानी मनुष्य के प्रत्यक्ष कर्म जैसे प्रदूषण फैलाना, युद्ध करना, स्वार्थ साधना। दूसरा, इन कर्मों के परिणामस्वरूप 'अदृश्य जगत में तूफानी प्रवाह' यानी सामूहिक चेतना में नकारात्मकता का जमाव, जो प्राकृतिक आपदाओं और व्यापक विनाश के रूप में प्रकट हो रहा है। यह आज की वैश्विक समस्याओं पर सीधे लागू होता है। उदाहरण के लिए, जलवायु परिवर्तन केवल CO₂ उत्सर्जन (प्रत्यक्ष कर्म) का परिणाम नहीं है, बल्कि प्रकृति के प्रति मनुष्य की शोषणकारी और असंवेदनशील सामूहिक मानसिकता (अदृश्य कारण) का भी फल है। इसी तरह, युद्ध केवल राजनीतिक निर्णयों का परिणाम नहीं, बल्कि घृणा, अविश्वास और भय की सामूहिक अदृश्य ऊर्जा का विस्फोट है।

2. प्रश्न: अध्याय में 'अदृश्य जगत' की अवधारणा को एक वैज्ञानिक या तार्किक आधार देने का क्या प्रयास किया गया है? साँस और ऋतु परिवर्तन के उदाहरणों का मूल्यांकन करें।

उत्तर: अध्याय में 'अदृश्य जगत' की अवधारणा को तार्किक आधार देने के लिए सरल और अनुभवजन्य उदाहरणों का प्रयोग किया गया है।

- **साँस का उदाहरण:** यह एक शक्तिशाली तर्क है। साँस (ऑक्सीजन) अदृश्य है, लेकिन जीवन के लिए सबसे आवश्यक है। यह सिद्ध करता है कि जो चीजें दिखाई नहीं देतीं, वे उन चीजों से अधिक प्रभावशाली हो सकती हैं जो दिखाई देती हैं।

- **ऋतु परिवर्तन का उदाहरण:** ऋतु परिवर्तन भी एक अदृश्य प्रक्रिया (पृथ्वी की धुरी का झुकाव, सूर्य की परिक्रमा) का परिणाम है, जो सभी दृश्यमान प्राणियों और क्रिया-कलापों को गहराई से प्रभावित करता है। ये उदाहरण 'अदृश्य जगत' को किसी अंधविश्वास के रूप में नहीं, बल्कि एक ऐसे सूक्ष्म आयाम के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिसके नियम और प्रभाव हैं, भले ही हम उन्हें सीधे देख न सकें। यह एक वैज्ञानिक दृष्टिकोण जैसा है जो मानता है कि हर दृश्य प्रभाव के पीछे एक अदृश्य कारण होता है।

अध्याय 16: व्यापक परिवर्तनों से भरा सन्धिकाल

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इतिहास में जब भी विनाशकारी संकट आए, तो अंत में क्या हुआ?

उत्तर: जब भी विनाश की विभीषिकाएँ आईं, तो अंत से पहले ही ऐसी व्यवस्था बनी और ऐसे साधन उभरे, जिन्होंने उन संकटों का अंत कर दिया।

2. प्रश्न: राजतंत्र के बाद प्रजातंत्र का आधार कैसे खड़ा हुआ?

उत्तर: जब जनता ने राजतंत्र की हानियों को समझा, तो प्रजातंत्र का आधार खड़ा होते देर नहीं लगी।

3. प्रश्न: पिछली एक-दो शताब्दियों में किन कुप्रथाओं को समय के प्रवाह ने उलट दिया?

उत्तर: दास प्रथा, जमींदारी, बाल-विवाह, नर-बलि, छुआछूत और जातिवाद जैसी कुप्रथाओं को समय के प्रवाह ने उलट दिया।

4. प्रश्न: समय की रफ्तार में परिवर्तन का क्या प्रमाण दिया गया है?

उत्तर: इसका प्रमाण यह है कि जो कार्य पहले हजारों वर्षों में होते थे, वे अब कुछ दशकों में हो जाते हैं, जैसे साम्यवाद का सौ वर्षों में फैलना और अंग्रेजी सभ्यता का विश्वव्यापी बनना।

5. प्रश्न: पाँच सौ वर्ष पहले का व्यक्ति यदि आज की दुनिया देखे तो उसे कैसा लगेगा?

उत्तर: उसे ऐसा लगेगा कि वह किसी नई दुनिया में आ गया है, जहाँ मनुष्य को ऋद्धि-सिद्धियाँ प्राप्त हो गई हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "समय के प्रवाह ने उन सब को उलट कर सीधा कर दिया।" - इस कथन का क्या आशय है? यह समाज के विकास के बारे में क्या बताता है?

उत्तर: इस कथन का आशय है कि जो सामाजिक प्रथाएँ और व्यवस्थाएँ समय के साथ अनुपयोगी और हानिकारक हो जाती हैं, उन्हें सामाजिक चेतना और समय की शक्ति अंततः समाप्त कर देती है। यह बताता है कि समाज का विकास एक निरंतर परिवर्तनशील प्रक्रिया है, जिसमें पुरानी और गलत मान्यताओं का अंत और नई, प्रगतिशील व्यवस्थाओं का उदय होता रहता है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि "लम्बे परिवर्तन चक्र अब छोटे में सिमट-सिकुड़ रहे हैं"? इसके क्या कारण हैं?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि अब बदलाव बहुत तेजी से हो रहे हैं। इसका कारण मानवी बुद्धिमत्ता की पराकाष्ठा, तीव्र गतिचक्र और विद्युत से लेकर कम्प्यूटर तक की तकनीकी प्रगति है, जिसने संचार और क्रियान्वयन की गति को असाधारण रूप से बढ़ा दिया है।

3. प्रश्न: वृत्रासुर, रावण और कंस जैसे असुरों के उदाहरणों से लेखक क्या सिद्ध करना चाहते हैं?

उत्तर: इन उदाहरणों से लेखक यह सिद्ध करना चाहते हैं कि आतंक और बुरी शक्तियाँ चाहे कितनी भी चरम अवस्था तक क्यों न पहुँच जाएँ, उनका अंत निश्चित होता है। सृष्टि की व्यवस्था उन्हें अपनी मौत मरने पर विवश कर देती है, ठीक वैसे ही जैसे इन असुरों का अंत हुआ।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, क्या सामाजिक परिवर्तन केवल बाहरी घटनाओं का परिणाम है या उसके पीछे कोई गहरी चेतना काम करती है?

उत्तर: अध्याय के अनुसार, सामाजिक परिवर्तन केवल बाहरी घटनाओं का परिणाम नहीं है, बल्कि उसके पीछे

एक गहरी सामूहिक चेतना और अदृश्य व्यवस्था काम करती है। लेखक कहते हैं कि विनाश से पहले ही "ऐसी व्यवस्था बनी, ऐसे साधन उभरे" जो संकटों का अंत कर देते हैं। वे परोक्ष दृष्टि से देख रहे मनीषियों का भी उल्लेख करते हैं, जो इस महान परिवर्तन के आधार को बनता हुआ देख रहे हैं। यह दर्शाता है कि सतही परिवर्तनों के मूल में एक गहरी, सुनियोजित शक्ति काम कर रही है।

2. प्रश्न: बीसवीं और इक्कीसवीं सदी के सन्धिकाल को "विपत्ति भरा वातावरण" और "सृजन सम्भावनाएँ" दोनों से युक्त क्यों बताया गया है?

उत्तर: इस सन्धिकाल को ऐसा इसलिए बताया गया है क्योंकि यह दो युगों के मिलन की वेला है, जिसमें ध्वंस और सृजन की प्रक्रियाएँ एक साथ चलती हैं। एक तरफ, पुराने युग की नकारात्मक प्रवृत्तियाँ अपने अंत से पहले चरम पर पहुँचती हैं, जिससे विपत्ति भरा वातावरण दिखाई देता है। दूसरी तरफ, नए युग की नींव रखने वाली सकारात्मक और सृजनात्मक संभावनाएँ भी साथ-साथ गतिशील होती हैं, जो उज्ज्वल भविष्य का संकेत देती हैं।

अध्याय 17: युग परिवर्तन का यही समय क्यों?

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युग का सामान्य अर्थ क्या है और इसे कैसे संबोधित किया जाता है?

उत्तर: युग का अर्थ जमाना (कालखंड) होता है। इसे उस जमाने की विशेषताओं के साथ जोड़कर संबोधित किया जाता है, जैसे - विज्ञानयुग, ऋषियुग आदि।

2. प्रश्न: धर्मग्रन्थों में वर्णित कलिकाल की समाप्ति की संगति किस समय से बैठती है?

उत्तर: धर्मग्रन्थों में वर्णित कलिकाल की समाप्ति की संगति प्रस्तुत समय (बीसवीं सदी के अंत) से ठीक-ठाक बैठ जाती है।

3. प्रश्न: व्यावहारिक युग कितने वर्ष का माना गया है और युगसन्धि-काल के लिए इसे कितना माना गया है?

उत्तर: बारह वर्ष का समय व्यावहारिक युग कहलाता है। युगसन्धि-काल के लिए सन् 1989 से 2000 तक के बारह वर्ष माने गए हैं।

4. प्रश्न: बारह वर्ष के अंतराल में मनुष्य के शरीर में क्या परिवर्तन होता है?

उत्तर: हर बारह वर्ष में मनुष्य के शरीर की प्रायः सभी कोशिकाएँ स्वयं को बदल लेती हैं।

5. प्रश्न: सौर कलंकों की प्रक्रिया में प्रचण्ड ऊर्जा निकलने से क्या प्रभाव पड़ता है?

उत्तर: इससे मौसम में असंतुलन से लेकर मानसिक विक्षोभ तक की व्यापक भूमिका सम्पन्न होती है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: युग की विभिन्न काल गणनाओं (करोड़ों वर्ष बनाम लाखों वर्ष) के विरोधाभास को लेखक कैसे

सुलझाते हैं?

उत्तर: लेखक इस विरोधाभास को प्रस्तुतिकरण की गलती बताकर सुलझाते हैं। वे श्रीमद्भागवत और मनुस्मृति जैसे ग्रंथों का हवाला देकर बताते हैं कि सूर्य परिभ्रमण काल के आधार पर जो देव युग की गणना की गई है, उसके अनुसार कलिकाल की समाप्ति का समय वर्तमान से मेल खाता है। वे यह भी स्पष्ट करते हैं कि यहाँ युग का तात्पर्य किसी विशिष्टता युक्त समय से है, न कि करोड़ों वर्षों की खगोलीय गणना से।

2. प्रश्न: लेखक ने बारह के अंक का विशेष महत्व किन-किन उदाहरणों से सिद्ध किया है?

उत्तर: लेखक ने बारह के अंक का महत्व ज्योतिष में बारह राशियों, पाण्डवों के बारह वर्ष के वनवास, और तपश्चर्या के लिए बारह वर्ष की अवधि जैसे उदाहरणों से सिद्ध किया है। इसके अतिरिक्त, उन्होंने सौर कलंकों के बनने-बिगड़ने की मध्यवर्ती अवधि भी बारह वर्ष की बताई है।

3. प्रश्न: सन् 1989-90 की अवधि में सौर कलंकों की तीव्रता का क्या विशेष महत्व बताया गया है?

उत्तर: खगोल विज्ञानियों के अनुसार, पिछले ढाई सौ वर्षों में इतने तीव्र सौर कलंक कभी नहीं देखे गए जितने इस अवधि में देखे गए। इसका विशेष महत्व यह है कि इससे निकलने वाली प्रचण्ड ऊर्जा आने वाले वर्षों में असाधारण घटनाक्रमों (जैसे मौसम असंतुलन और मानसिक विक्षोभ) से भरे होने की आशा जगाती है, जो युग परिवर्तन के संकेतों से मेल खाता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "युग परिवर्तन" की अवधारणा को अध्याय में वैज्ञानिक और पौराणिक दोनों दृष्टिकोणों से कैसे प्रमाणित किया गया है?

उत्तर: अध्याय में युग परिवर्तन को दोनों दृष्टिकोणों से प्रमाणित किया गया है:

◦ **वैज्ञानिक दृष्टिकोण:** इसमें सौर कलंकों के बारह वर्षीय चक्र का वैज्ञानिक तथ्य प्रस्तुत किया गया है, जिसके प्रभाव से पृथ्वी पर भौतिक (मौसम) और मानसिक (विक्षोभ) परिवर्तन होते हैं। शरीर विज्ञान के अनुसार हर बारह वर्ष में कोशिकाओं के बदलने का तथ्य भी दिया गया है।

◦ **पौराणिक/आध्यात्मिक दृष्टिकोण:** इसमें श्रीमद्भागवत, महाभारत जैसे धर्मग्रन्थों की युग गणना का संदर्भ दिया गया है। साथ ही, बारह के अंक के ज्योतिषीय और तपश्चर्या संबंधी महत्व (जैसे पाण्डवों का वनवास) का भी उल्लेख है। इन दोनों दृष्टिकोणों को एक साथ प्रस्तुत करके लेखक यह दर्शाते हैं कि युग परिवर्तन की अवधारणा केवल पौराणिक मान्यता नहीं, बल्कि वैज्ञानिक आधारों से भी समर्थित है।

2. प्रश्न: क्या इस अध्याय के अनुसार युग परिवर्तन एक पूर्वनिश्चित खगोलीय घटना है या यह मानवी पुरुषार्थ पर भी निर्भर है?

उत्तर: अध्याय मुख्य रूप से इसे एक पूर्वनिश्चित खगोलीय और प्राकृतिक चक्र के रूप में प्रस्तुत करता है,

जिसका प्रभाव अवश्यंभावी है (जैसे सौर कलंकों का प्रभाव)। हालाँकि, "मानवी पुरुषार्थयुक्त विकास" का भी उल्लेख है, जो विनाश की प्रक्रियाओं के साथ-साथ चलता है। इससे यह संकेत मिलता है कि यद्यपि परिवर्तन का समय और उसकी पृष्ठभूमि प्राकृतिक शक्तियों द्वारा निर्धारित है, लेकिन उस परिवर्तन को सकारात्मक दिशा देने में मानवी पुरुषार्थ की भी भूमिका है।

अध्याय 18: अन्तःस्फुरणा बनाम भविष्य बोध

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: आरम्भ काल में अग्नि और सूत कातने जैसे आविष्कार किसकी देन थे?

उत्तर: ये आविष्कार अन्तःस्फुरणा की देन थे।

2. प्रश्न: "इलहाम" किसे कहा गया है?

उत्तर: मनःशक्ति सम्पन्न व्यक्ति के माध्यम से ईश्वरीय वाणी के प्रकट होने को "इलहाम" कहा गया है।

3. प्रश्न: भविष्य विज्ञान (Futurology) को किस तंत्र का एक अंग माना जा सकता है?

उत्तर: इसे भविष्यवाणी तंत्र का एक अंग माना जा सकता है।

4. प्रश्न: भविष्य के सम्बन्ध में उज्ज्वल सम्भावनाएँ व्यक्त करने का मूल आधार क्या है?

उत्तर: इसका मूल आधार मानवी विभूति अन्तःस्फुरणा और पूर्वानुमान लगा पाने की दिव्य सामर्थ्य है।

5. प्रश्न: लेखक एल्विन टाफलर की किस कृति का उल्लेख करते हैं जिसमें इक्कीसवीं सदी को परिवर्तनों का काल बताया गया है?

उत्तर: लेखक एल्विन टाफलर की कृति 'फ्यूचर शॉक' (Future Shock) का उल्लेख करते हैं।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: लेखक के अनुसार, जानने और सीखने की प्रक्रिया के दो प्रमुख स्रोत कौन से हैं? उनमें से किसे अधिक रहस्यमयी माना गया है?

उत्तर: जानने और सीखने के दो प्रमुख स्रोत हैं: पहला, दूसरों के सान्निध्य, यात्रा और पर्यटन से सीखना। दूसरा स्रोत अन्तःस्फुरणा है, जो मनुष्य के अन्तराल में निहित रहस्यमयी शक्तियों से मिलती है। इनमें से अन्तःस्फुरणा को अधिक रहस्यमयी माना गया है क्योंकि इसका कोई प्रत्यक्ष आधार नहीं दिखता।

2. प्रश्न: भविष्य विज्ञान (Futurology) किस आधार पर भविष्य के बारे में बताता है और यह पारंपरिक भविष्यवाणी से कैसे भिन्न है?

उत्तर: भविष्य विज्ञान वर्तमान के अध्ययन और कम्प्यूटर के आँकड़ों को आधार बनाकर भविष्य के बारे में बताता है। यह पारंपरिक भविष्यवाणी से इस मायने में भिन्न है कि यह किसी दैवी या अतीन्द्रिय क्षमता पर नहीं, बल्कि वैज्ञानिक विश्लेषण और तर्कों पर आधारित है, और अब इसे एक विज्ञान सम्मत विधा माना जाने

लगा है।

3. प्रश्न: परोक्ष जगत में चल रही हलचलों और उज्ज्वल भविष्य की आशा के बीच क्या संबंध है?

उत्तर: संबंध यह है कि जो उज्ज्वल भविष्य की आशा व्यक्त की जा रही है, उसकी जड़ें परोक्ष जगत में चल रही सकारात्मक हलचलों और प्रयासों में ही विद्यमान हैं। भले ही ये प्रयास अभी प्रत्यक्ष रूप से दिखाई न दे रहे हों, लेकिन उनकी परिणति निश्चित ही सुखद होगी, और यही विश्वास आशा का संचार करता है।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: क्या अन्तःस्फुरणा केवल कुछ विशेष लोगों (जैसे पैगम्बर, मनीषी) तक ही सीमित है, या यह एक सामान्य मानवीय क्षमता है? अध्याय के तर्कों के आधार पर विश्लेषण करें।

उत्तर: अध्याय के तर्कों के अनुसार, अन्तःस्फुरणा एक सामान्य मानवीय क्षमता है, जिसे कोई भी विकसित कर सकता है, हालाँकि यह कुछ लोगों में अधिक जागृत होती है। लेखक कहते हैं कि पूर्वानुमान की दिव्य सामर्थ्य को "कोई भी मनुष्य अपने अन्दर जगा सकता है"। यद्यपि वे पैगम्बरों और मनीषियों का उदाहरण देते हैं, लेकिन अग्नि और सूत कातने जैसे शुरुआती आविष्कार सामान्य मनुष्यों द्वारा ही हुए होंगे। अतः, यह एक सार्वभौमिक क्षमता है, जिसका उच्चतम विकास हमें मनीषियों में देखने को मिलता है।

2. प्रश्न: अध्याय में वर्णित भविष्यवाणियों का उद्देश्य लोगों में भय पैदा करना है या विश्वास? लेखक का इस बारे में क्या दृष्टिकोण है?

उत्तर: इन भविष्यवाणियों का उद्देश्य स्पष्ट रूप से लोगों में विश्वास पैदा करना है, भय नहीं। लेखक इस बात पर जोर देते हैं कि इन सभी संदर्भों और कथनों का एकमात्र उद्देश्य "लोगों में यह विश्वास पैदा किये जा सके कि आगे आने वाला समय भयावह त्रासदी भरा नहीं है, सुखद है"। वे नकारात्मक भविष्यवाणियों की तुलना में उन लेखकों (जैसे एल्विन टाफलर) और विधाओं (भविष्य विज्ञान) पर अधिक ध्यान केंद्रित करते हैं जो परिवर्तनों के बाद सुख-समृद्धि की संभावना प्रकट करते हैं।

अध्याय 19: वैज्ञानिक शोधें भी पूर्वाभास से उपजीं

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: न्यूटन को गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की जानकारी किस घटना से मिली?

उत्तर: न्यूटन को एक सेब के फल को टूटकर पृथ्वी पर गिरते देखने की घटना से गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत की जानकारी मिली।

2. प्रश्न: जेम्स वाट को किस चीज़ ने भाप की शक्ति का सिद्धांत खोजने के लिए प्रेरित किया?

उत्तर: पतीली में उबलते पानी की भाप से उठते और गिरते ढक्कन ने किशोर जेम्स वाट को भाप की शक्ति का सिद्धांत खोजने के लिए प्रेरित किया।

3. प्रश्न: श्री फ्रेडरिक कैकुले ने बेंजीन के न्यूक्लियस की आकृति की खोज किस अवस्था में की?

उत्तर: उन्होंने स्वप्नावस्था में एक साँप को अपनी ही पूँछ काटते हुए देखा और जागकर जब उसका चित्र बनाया तो बेंजीन के न्यूक्लियस की षट्कोण आकृति की खोज हो गई।

4. प्रश्न: बेंजामिन ऐड्रिनलिन ने तड़ित बिजली चालक का आविष्कार कैसे किया?

उत्तर: उन्होंने तूफान में पतंग उड़ाई और उसकी गीली डोर से बंधी चाबी से बिजली की चिंगारी चमकते देखकर तड़ित बिजली चालक का आविष्कार किया।

5. प्रश्न: समाज व्यवस्था के लिए प्रचलन और परम्पराएँ बनाने वालों को प्रेरणा कहाँ से मिली होगी?

उत्तर: उन्हें भी अन्तर्प्रज्ञा ने बोध कराया होगा और परब्रह्म की प्रेरणा मिली होगी।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "अनेक आविष्कारों का पूर्व स्वरूप एक खाके के रूप में मनीषीगणों के अन्तःकरण में उपज चुका था।"

इस कथन का क्या अर्थ है?

उत्तर: इस कथन का अर्थ है कि कई वैज्ञानिक खोजें सीधे-सीधे प्रयोगों का परिणाम नहीं थीं, बल्कि उनका प्रारंभिक विचार या खाका वैज्ञानिकों को एक पूर्वाभास या अन्तर्बोध के रूप में प्राप्त हुआ था। बाद में उन्होंने उस आंतरिक प्रेरणा को प्रयोगों के माध्यम से सिद्ध किया।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, कल्पना और अप्रत्याशित घटनाओं को मूर्त रूप देने में दैवी चेतना की क्या भूमिका होती है?

उत्तर: लेखक के अनुसार, दैवी चेतना ही मानवी प्रज्ञा (बुद्धि) को माध्यम बनाकर कल्पनाओं और अप्रत्याशित घटनाओं को मूर्त रूप देती है। चीन की दीवार या मिस्र के पिरामिड जैसे असंभव कार्य इसी दैवी प्रेरणा के परिणाम थे जो मनुष्य के माध्यम से साकार हुए।

3. प्रश्न: अध्याय में वर्णित विभिन्न आविष्कारों (गुरुत्वाकर्षण, भाप की शक्ति, बेंजीन) में क्या समानता है?

उत्तर: इन सभी आविष्कारों में यह समानता है कि इनकी उत्पत्ति किसी साधारण घटना को देखकर वैज्ञानिक के मन में जागी एक असाधारण अन्तःस्फुरणा या पूर्वाभास से हुई। सभी मामलों में, एक बाहरी घटना ने उनकी आंतरिक प्रज्ञा को जगाया, जिससे एक क्रांतिकारी खोज का जन्म हुआ।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय के आधार पर विश्लेषण करें कि क्या वैज्ञानिक आविष्कार केवल तार्किक चिन्तन का परिणाम हैं या इसमें अचेतन मन और अन्तर्बोध की भी भूमिका होती है?

उत्तर: अध्याय के तर्कों के अनुसार, वैज्ञानिक आविष्कार केवल तार्किक चिन्तन का परिणाम नहीं हैं, बल्कि इसमें अचेतन मन और अन्तर्बोध की निर्णायक भूमिका होती है। लेखक स्पष्ट करते हैं कि जिन संभावनाओं पर

मनीषा (बुद्धि) चिंतन करती है, वे अचेतन के गर्भ में पहले ही जन्म ले चुकी होती हैं। न्यूटन, जेम्स वाट, और कैकुले के उदाहरण यह सिद्ध करते हैं कि तार्किक प्रयास के बीच जब अन्तर्बोध या स्वप्न के माध्यम से अचेतन मन कोई संकेत देता है, तभी वास्तविक खोज संभव हो पाती है। अतः, तर्क और अन्तर्बोध दोनों मिलकर ही आविष्कार को जन्म देते हैं।

2. प्रश्न: "घटा कितनी ही काली एवं डरावनी क्यों न हो, तेज आँधी उसे कहीं से कहीं पहुँचा देती है... यही बात मानवी पुरुषार्थ के बारे में भी लागू होती है।" इस रूपक के माध्यम से लेखक वर्तमान संकटों और भविष्य की संभावनाओं के बारे में क्या संदेश दे रहे हैं?

उत्तर: इस रूपक के माध्यम से लेखक यह शक्तिशाली संदेश दे रहे हैं कि मनुष्य अपनी नियति का निर्माता स्वयं है। वर्तमान संकट (काली घटा) चाहे कितने भी भयावह क्यों न लगें, लेकिन यदि मनुष्य अपनी दिशा बदल ले और संकल्पित प्रयास (तेज आँधी) करे तो वह इन संकटों को पूरी तरह समाप्त कर सकता है और हर भवितव्यता को बदल सकता है। यह संदेश निराशा को दूर कर आशा और कर्मठता का संचार करता है, और बताता है कि उज्ज्वल भविष्य केवल एक भविष्यवाणी नहीं, बल्कि सही दिशा में किए गए पुरुषार्थ का संभावित परिणाम है।

अध्याय 20: इक्कीसवीं सदी एवं भविष्यवेत्ताओं के अभिमत

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: भविष्यवाणियों के चार प्रमुख आधार कौन-से माने गए हैं?

उत्तर: भविष्यवाणियों के चार आधार हैं: 1. दिव्य दृष्टि सम्पन्न व्यक्तियों के वचन, 2. ज्योतिष विज्ञान की गणनाएँ, 3. धर्मग्रन्थों में वर्णित कथन, और 4. भविष्य विज्ञानियों द्वारा किया गया वैज्ञानिक आकलन।

2. प्रश्न: नोस्ट्राडेमस ने अपनी भविष्यवाणी में हिटलर का उल्लेख किस नाम से किया था?

उत्तर: नोस्ट्राडेमस ने हिटलर का उल्लेख "हिस्टलर" नाम से किया था।

3. प्रश्न: महर्षि अरविन्द के अनुसार, महाकाल की युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया किस रूप में अवतरित होगी?

उत्तर: उनके अनुसार, यह प्रक्रिया किसी व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि विचारशक्ति के रूप में अवतरित होगी, जिसे "निष्कलंक प्रज्ञावतार" कहा जाएगा।

4. प्रश्न: जीन डिक्सन के अनुसार, इक्कीसवीं सदी किस प्रकार की होगी और उसका नेतृत्व कौन करेगा?

उत्तर: उनके अनुसार, इक्कीसवीं सदी उज्ज्वल संभावनाओं से भरी होगी और यह नारी प्रधान होगी, जिसमें विभिन्न क्षेत्रों का नेतृत्व महिलाएँ संभालेंगी।

5. प्रश्न: प्रोफेसर हरार के अनुसार, भारत की भविष्य में क्या भूमिका होगी?

उत्तर: उनके अनुसार, भारत एक विराट शक्ति के रूप में उभरेगा और वहाँ का एक संस्थान धर्मतंत्र के माध्यम

से विश्वव्यापी विचारक्रान्ति का वातावरण बनाएगा।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: नोस्ट्राडेमस ने बीसवीं सदी के अंत और नए युग के आगमन के बारे में क्या कहा है?

उत्तर: नोस्ट्राडेमस के अनुसार, बीसवीं सदी के अंत में बुद्धिवाद अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचेगा, जिससे दैवी प्रकोप बढ़ेंगे। इसके बाद एक आध्यात्मिक चेतना का उदय होगा जो संहार की संभावनाओं को निरस्त करेगी और एक नए युग ("एज ऑफ ट्रुथ") का श्रीगणेश होगा। यह सन्धिकाल सन् 1999 तक चलेगा।

2. प्रश्न: स्वामी विवेकानंद ने भारत के भविष्य के बारे में क्या भविष्यवाणी की थी?

उत्तर: स्वामी विवेकानंद ने भविष्यवाणी की थी कि भारत में व्यावहारिक अध्यात्म को जन-जन तक पहुँचाया जाएगा, मंदिर जनजागृति के केंद्र बनेंगे, संस्कार शिक्षा के केंद्र खुलेंगे और संस्कृति का प्रचार होगा। उन्होंने यह भी कहा कि आने वाला युग एकता और समता का होगा, जिसे आध्यात्मिक साम्यवाद कहा जाएगा।

3. प्रश्न: जीन डिक्सन की भविष्यवाणियाँ केवल आध्यात्मिक ही नहीं, बल्कि सामाजिक और वैज्ञानिक भी थीं। उदाहरण देकर स्पष्ट करें।

उत्तर: यह सही है। उनकी भविष्यवाणियों में एक ओर भारतीय संस्कृति द्वारा विश्व का मार्गदर्शन करने जैसी आध्यात्मिक बातें हैं, तो वहीं दूसरी ओर ऊर्जा के वैकल्पिक स्रोतों की खोज, वैज्ञानिकों का एक मंच पर आना, शिक्षा में परिवर्तन और विचार सम्प्रेषण द्वारा संपर्क जैसी सामाजिक और वैज्ञानिक भविष्यवाणियाँ भी शामिल हैं।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय में वर्णित विभिन्न भविष्यवेत्ताओं (नोस्ट्राडेमस, महर्षि अरविन्द, जीन डिक्सन आदि) के कथनों में क्या समानताएँ हैं? ये समानताएँ क्या संकेत देती हैं?

उत्तर: इन सभी भविष्यवेत्ताओं के कथनों में कई महत्वपूर्ण समानताएँ हैं:

- **संकट का काल:** सभी मानते हैं कि बीसवीं सदी का अंत एक संकटपूर्ण और उथल-पुथल भरा सन्धिकाल होगा।

- **भारत की अग्रणी भूमिका:** नोस्ट्राडेमस, प्रो. हरार और जीन डिक्सन, सभी ने भविष्य में भारत के एक महाशक्ति और विश्व मार्गदर्शक के रूप में उभरने की बात कही है।

- **आध्यात्मिक और वैचारिक क्रांति:** सभी का मत है कि भौतिकवाद के बाद एक आध्यात्मिक और वैचारिक क्रांति आएगी जो नए युग का आधार बनेगी।

- **उज्ज्वल भविष्य:** संकट काल के बाद इक्कीसवीं सदी के एक उज्ज्वल, समतावादी और शांतिपूर्ण युग होने पर सभी सहमत हैं। ये समानताएँ यह संकेत देती हैं कि अलग-अलग देशों, संस्कृतियों और समय के

दिव्यदर्शियों ने अपनी अतीन्द्रिय क्षमता से एक ही वैश्विक परिवर्तन की लहर को महसूस किया और उसकी व्याख्या की।

2. प्रश्न: भविष्यवाणियों का आधार "दिव्य दृष्टि" और "वैज्ञानिक आकलन" दोनों को बताया गया है। क्या ये दोनों एक-दूसरे के विरोधी हैं या पूरक? अध्याय के संदर्भ में विश्लेषण करें।

उत्तर: अध्याय के संदर्भ में, ये दोनों दृष्टिकोण **विरोधी नहीं, बल्कि पूरक** हैं। लेखक दोनों को समान महत्व देते हैं। एक ओर वे नोस्ट्राडेमस और जीन डिक्सन जैसे दिव्यदर्शियों की अतीन्द्रिय क्षमता पर आधारित भविष्यवाणियों को प्रस्तुत करते हैं, तो दूसरी ओर वे भविष्य विज्ञान (Futurology) का भी उल्लेख करते हैं जो वैज्ञानिक उपकरणों और आँकड़ों पर आधारित है। दोनों ही प्रकार के स्रोत एक ही निष्कर्ष पर पहुँच रहे हैं - बीसवीं सदी का अंत एक महान परिवर्तन का काल होगा जिसके बाद उज्ज्वल भविष्य आएगा। यह दर्शाता है कि जिसे दिव्यदर्शी अपनी अन्तःस्फुरणा से जानते हैं, उसी की पुष्टि वैज्ञानिक अपने तर्कों और विश्लेषणों से कर रहे हैं, जिससे युग परिवर्तन की संभावना और भी प्रबल हो जाती है।

अध्याय 21: धर्मग्रन्थों में वर्णित भविष्य कथन

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: धर्मग्रन्थों को "अपौरुषेय" क्यों कहा गया है?

उत्तर: धर्मग्रन्थों को "अपौरुषेय" इसलिए कहा गया है क्योंकि उन्हें ईश्वर की वाणी माना गया है।

2. प्रश्न: श्रीमद्भागवत में कलियुग के लक्षणों का वर्णन किस अध्याय में किया गया है?

उत्तर: इसके द्वादश स्कन्ध के द्वितीय-तृतीय अध्याय में कलियुग के लक्षणों का वर्णन किया गया है।

3. प्रश्न: महाभारत के अनुसार, सतयुग का शुभारम्भ कब होगा?

उत्तर: महाभारत के वन पर्व के अनुसार, जब चन्द्र, सूर्य, बृहस्पति और पुष्य नक्षत्र एक राशि में आएँगे, तब सतयुग का शुभारम्भ होगा।

4. प्रश्न: ओल्ड टेस्टामेन्ट में नए युग से पहले किन घटनाओं के होने की बात कही गई है?

उत्तर: इसमें कहा गया है कि नए युग से पहले प्राकृतिक आपदा और मानवी विग्रह (संघर्ष) अपने चरमोत्कर्ष पर होंगे।

5. प्रश्न: इस्लाम धर्म में "कयामत" के बाद क्या होने की बात कही गई है?

उत्तर: "कुरआन सार" के अनुसार, कयामत के बाद समस्त पृथ्वी पर ऐसा प्रकाश छा जाएगा कि हमेशा दिन रहेगा और रात्रि की कालिमा कभी नहीं आएगी।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: श्रीमद्भागवत में वर्णित कलियुग के लक्षण आज के समय से कैसे मेल खाते हैं?

उत्तर: श्रीमद्भागवत में वर्णित लक्षण जैसे - नई-नई बीमारियों का पनपना, सम्प्रदायवाद का बढ़ना, लोगों का एक-दूसरे के प्रति असहिष्णु होना, अनास्था का बाहुल्य और आचार-विचार में भ्रष्टाचार का बढ़ना, ये सभी लक्षण आज के समय में स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहे हैं।

2. प्रश्न: "सेवन टाइम्स" की भविष्यवाणियों के विशेषज्ञों ने इसके घटित होने का समय क्या बताया है और इसकी संगति किस अन्य भविष्यवक्ता से बैठती है?

उत्तर: इसके विशेषज्ञों ने इसके घटित होने का समय 1980 से 2000 के बीच बताया है। इसकी संगति नोस्ट्राडेमस की भविष्यवाणियों से ठीक-ठीक बैठ जाती है।

3. प्रश्न: श्री सैयदकुल और डॉ. कैरेल के अनुसार आने वाले समय में शिक्षा और अध्यात्म की क्या भूमिका होगी?

उत्तर: उनके अनुसार, इक्कीसवीं सदी का प्रारम्भ विज्ञान और धर्म के समन्वय के रूप में होगा तथा शिक्षा पर जोर दिया जाएगा। इससे वातावरण आध्यात्मिक बनेगा और पृथ्वी पर महामानवों का प्रादुर्भाव होगा, जिससे सर्वत्र एकता और समता का राज्य स्थापित होगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: इस अध्याय में विभिन्न धर्मग्रन्थों (हिन्दू, ईसाई, इस्लाम) से उद्धरण दिए गए हैं। इन सभी में भविष्य को लेकर क्या समान संदेश निहित है?

उत्तर: इन सभी धर्मग्रन्थों में भविष्य को लेकर एक गहरा और समान संदेश निहित है। यह संदेश तीन चरणों में है:

1. वर्तमान पतन: सभी ग्रंथ इस बात पर सहमत हैं कि वर्तमान या निकट भविष्य का समय नैतिक पतन, संघर्ष, प्राकृतिक आपदाओं और अनाचार से भरा होगा (जिसे कलियुग, कयामत या विग्रह कहा गया है)।

2. दैवी हस्तक्षेप: सभी मानते हैं कि इस चरम पतन के बाद एक दैवी हस्तक्षेप होगा (निष्कलंक सत्ता का अवतरण, स्वर्णिम युग की स्थापना, दिव्य प्रकाश का छाना)।

3. उज्ज्वल भविष्य: अंत में, सभी एक उज्ज्वल, शांतिपूर्ण, समतावादी और आध्यात्मिक युग (सतयुग, स्वर्णिम युग, एकता का राज्य) के आगमन की घोषणा करते हैं। यह समानता दर्शाती है कि विश्व की प्रमुख आध्यात्मिक परंपराएँ मानव इतिहास के एक महान चक्र और उसके उज्ज्वल भविष्य के प्रति आश्वस्त हैं।

2. प्रश्न: "अब समय के प्रवाह के साथ व्यक्ति को अपने चिन्तन को भी बदल लेना चाहिए, नहीं तो परब्रह्म की चेतन सत्ता उसे दण्ड व्यवस्था द्वारा भी सही मार्ग पर लाना जानती है।" - इस कथन में मनुष्य के लिए क्या चेतावनी और क्या अवसर छिपा है?

उत्तर: इस कथन में मनुष्य के लिए एक गंभीर चेतावनी और एक महान अवसर दोनों छिपे हैं:

◦ **चेतावनी:** चेतावनी यह है कि युग परिवर्तन का प्रवाह निश्चित और शक्तिशाली है। जो व्यक्ति या समाज अपनी पुरानी, स्वार्थपूर्ण और विनाशकारी सोच को नहीं बदलेगा, वह इस प्रवाह के विरुद्ध खड़ा होगा और प्रकृति या दैवी व्यवस्था (परब्रह्म की चेतन सत्ता) के "दण्ड" का भागी बनेगा। यह दण्ड प्राकृतिक आपदाओं, संघर्षों या अन्य कष्टों के रूप में हो सकता है।

◦ **अवसर:** अवसर यह है कि यदि व्यक्ति स्वेच्छा से अपने चिंतन को बदलकर समय की मांग के अनुरूप ढाल लेता है, तो वह न केवल इस दण्ड से बच सकता है, बल्कि आने वाले नए और उज्ज्वल युग के निर्माण में एक सहयोगी बन सकता है। यह उसे आध्यात्मिक विकास और एक बेहतर दुनिया का हिस्सा बनने का अवसर प्रदान करता है।

अध्याय 22: उज्ज्वल भविष्य की संरचना हेतु संकल्पित प्रयास सरल स्तर के प्रश्न

1. **प्रश्न:** महत्वपूर्ण कार्यों का शुभारम्भ देव आवाहन के साथ क्यों किया जाता है?

उत्तर: महत्वपूर्ण कार्यों का शुभारम्भ देव आवाहन के साथ इसलिए किया जाता है ताकि अदृश्य शक्तियों की साक्षी और सहयोग प्राप्त हो सके।

2. **प्रश्न:** लेखक के अनुसार, इन दिनों कौन-से दोहरे महान परिवर्तन होने हैं?

उत्तर: इन दिनों पहला परिवर्तन अवांछनीय दुष्प्रवृत्तियों का निराकरण (समापन) और दूसरा उनके स्थान पर सत्प्रवृत्तियों का संस्थापन होना है।

3. **प्रश्न:** युग परिवर्तन की गति में असाधारण तीव्रता आने का क्या प्रतीक है?

उत्तर: इसका प्रतीक यह है कि जो कार्य पहले हजारों वर्षों में नहीं हो पाते थे, वे अब कुछ दशकों में ही संपन्न हो जाते हैं, जिससे लगता है कि कोई पुराने समय का व्यक्ति आज की दुनिया में आ जाए तो उसे परलोक जैसा लगेगा।

4. **प्रश्न:** युग-धर्म का पाञ्चजन्य उद्घोष क्या है?

उत्तर: महाकाल की प्रेरणा, ईश्वर की इच्छा और समय की मांग के अनुरूप इक्कीसवीं सदी में पतन का प्रवाह रुकेगा और उज्ज्वल भविष्य की संरचना का कार्य तूफानी गति से आगे बढ़ेगा, यही युग-धर्म का पाञ्चजन्य उद्घोष है।

5. **प्रश्न:** युगसन्धि महापुरश्चरण का अद्भुत उपचार कहाँ आरम्भ हुआ है?

उत्तर: यह उपचार शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के क्षेत्र से आरम्भ हुआ है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. **प्रश्न:** "पानी के प्रवाह के साथ तिनके बहते चले जाते हैं।" इस उदाहरण के माध्यम से लेखक अदृश्य जगत

की भूमिका के बारे में क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इस उदाहरण से लेखक यह समझाना चाहते हैं कि जैसे पानी के प्रवाह (अदृश्य शक्ति) के साथ चलने वाले तिनकों को कम मेहनत में अधिक गति मिलती है, वैसे ही जो व्यक्ति या प्रयास समय के प्रवाह और अदृश्य शक्तियों के अनुकूल होते हैं, उन्हें कम शक्ति लगाकर भी बड़ी सफलता मिलती है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि भविष्य में होने वाले परिवर्तनों के पीछे मनुष्य की भूमिका तो होगी, पर उसके पीछे नियन्ता की प्रेरणा काम कर रही होगी?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि मनुष्य स्वयं में नगण्य है, लेकिन जब नियन्ता की प्रचण्ड प्रेरणा और सुनिश्चित योजना काम करती है, तो वही साधारण मनुष्य हनुमान और अर्जुन जैसी असाधारण भूमिका निभाता है। अतः, मनुष्य केवल एक माध्यम बनेगा, असली शक्ति और योजना नियन्ता की ही होगी।

3. प्रश्न: युग चेतना की गंगोत्री किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज को युग चेतना की गंगोत्री कहा गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि जैसे गंगा गंगोत्री से निकलकर पूरे देश में फैल जाती है और सूर्य पूर्वाचल से निकलकर पूरे संसार को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार युग परिवर्तन की चेतना का शुभारम्भ शान्तिकुञ्ज से होगा और फिर वह पूरे विश्व में फैल जाएगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में 'प्रत्यक्ष पुरुषार्थ' और 'अदृश्य संकल्प' दोनों की आवश्यकता क्यों है? इन दोनों में क्या संबंध है?

उत्तर: उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में दोनों की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि परिवर्तन एक दोहरे मोर्चे पर होना है। 'प्रत्यक्ष पुरुषार्थ' जैसे राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रयास बाहरी व्यवस्था को बदलते हैं, जबकि 'अदृश्य संकल्प' और आध्यात्मिक उपचार सूक्ष्म वातावरण को शुद्ध करते हैं जो इन बाहरी परिवर्तनों का आधार बनता है। इन दोनों में गहरा संबंध है; अदृश्य संकल्प और दैवी प्रेरणा प्रत्यक्ष पुरुषार्थ को दिशा, बल और सफलता प्रदान करते हैं। मनुष्य के प्रयास तभी सफल होते हैं जब उन्हें अदृश्य जगत का सहयोग प्राप्त हो।

2. प्रश्न: "गीताकार ने अर्जुन से कहा था कि कौरव दल का मरण तो नियति ने ही करके रख दिया है, राज्य सुख और अक्षय यश का भागी बनने से कतराता क्यों है?" इस प्रसंग का वर्तमान युग परिवर्तन के संदर्भ में क्या महत्व है?

उत्तर: इस प्रसंग का वर्तमान युग परिवर्तन के संदर्भ में गहरा महत्व है। यह बताता है कि अवांछनीयताओं का विनाश और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण महाकाल (नियन्ता) द्वारा पहले ही निश्चित किया जा चुका है, ठीक

वैसे ही जैसे कौरवों का मरण नियति ने तय कर दिया था। अब जो भी प्रतिभाशाली और आदर्शवादी व्यक्ति इस परिवर्तन में सहयोग करेगा, वह केवल एक माध्यम बनेगा और उसे इस महान कार्य का श्रेय और सौभाग्य प्राप्त होगा। यह लोगों को निष्क्रिय रहने के बजाय युग-धर्म को पहचानकर इस महाअभियान में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करता है।

अध्याय 23: विचारक्रान्ति का एक छोटा मॉडल

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज को इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की संरचना का क्या कहा गया है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज को इक्कीसवीं सदी के उपयुक्त उज्ज्वल भविष्य संरचना का एक छोटा मॉडल कहा गया है।

2. प्रश्न: युग क्रान्तियों में कौन-सी तीन अमोघ शक्तियाँ हमेशा अपनी भूमिका निभाती रही हैं?

उत्तर: वे तीन शक्तियाँ हैं: 1. महाप्रज्ञा की पक्षधर लेखनी, 2. जनमानस को झकझोरने वाली परिमार्जित वाणी, और 3. प्रामाणिकता सिद्ध करने वाले पुरोधाओं का समूह।

3. प्रश्न: विचार क्रान्ति के लिए लोगों को सहमत कराना क्यों कठिन होता है?

उत्तर: यह इसलिए कठिन होता है क्योंकि लोग पुरानी लीक से हटना नहीं चाहते, उन्हें लगता है कि इससे पूर्वजों की हेठी होती है और वे अपने पूर्वाग्रह के समर्थन में बेतुके तर्क देते हैं।

4. प्रश्न: अखण्ड ज्योति पत्रिका का आरम्भ कब और कितनी प्रतियों से हुआ था?

उत्तर: इसका आरम्भ आज से ५० वर्ष पूर्व (पुस्तक लेखन के समय से) ५०० प्रतियों से हुआ था।

5. प्रश्न: युग निर्माण योजना पत्रिका का विषय क्या था?

उत्तर: इस पत्रिका का विषय परिवार एवं सामाजिक निर्माण से संबंधित प्रतिपादन करना था, जो अखण्ड ज्योति की सीमा में नहीं आता था।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विचार क्रान्ति के लिए प्रामाणिक लोगों की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर: विचार क्रान्ति के लिए प्रामाणिक लोगों की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि आज के समय में आदर्शवादिता केवल कहने की चीज रह गई है। लोग उस पर तभी विश्वास करेंगे जब उसे प्रस्तुत करने वालों की कथनी और करनी एक हो और उनकी प्रामाणिकता पर कोई उँगली न उठती हो।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज की पत्रिकाओं के प्रकाशन की क्या विशेष नीति है और उसका क्या परिणाम हुआ है?

उत्तर: पत्रिकाओं के प्रकाशन की विशेष नीति है कि वे बिना कोई विज्ञापन लिए और बिना कोई अर्थ याचना किए, केवल अपनी उपयोगिता और पाठकों के सहयोग पर चलेंगी। वे "न लाभ, न हानि" (नो प्रॉफिट, नो लॉस) के सिद्धांत पर बहुत कम मूल्य पर प्रकाशित होती हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि ये पत्रिकाएँ अपनी

उपयोगिता के बल पर लाखों पाठकों तक पहुँच गई हैं।

3. प्रश्न: झोला पुस्तकालय की अवधारणा क्या है और यह किस भावना से काम करती है?

उत्तर: झोला पुस्तकालय की अवधारणा यह है कि पाठक अपने कन्धों पर झोले में पुस्तकें रखकर अपने परिचय क्षेत्र में जाते हैं, दूसरों को पढ़ने के लिए देते हैं और वापस लेते हैं। यह कार्य विशुद्ध सेवा भावना से होता है और इसमें किसी प्रकार के कमीशन का लेन-देन नहीं होता।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "भव्य भवन बनाने से पहले इनके छोटे आकार के मॉडल बना लिए जाते हैं।" शान्तिकुञ्ज इस अवधारणा को कैसे चरितार्थ करता है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज इस अवधारणा को इस प्रकार चरितार्थ करता है कि वह इक्कीसवीं सदी के विशाल और भव्य उज्ज्वल भविष्य का एक छोटा, व्यावहारिक और आनुपातिक मॉडल प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार एक मॉडल को देखकर पूरी परियोजना की कल्पना की जा सकती है, उसी प्रकार शान्तिकुञ्ज की कार्यप्रणाली (लेखनी, वाणी और कर्तृत्व का समन्वय) को देखकर यह समझा जा सकता है कि विश्वव्यापी विचार-क्रान्ति कैसे संभव होगी और नए युग का स्वरूप कैसा होगा।

2. प्रश्न: "याचना करने, अर्थ संग्रह करने की अपेक्षा सूत्र संचालकों द्वारा यह उचित समझा गया कि उपयोगिता को अपने बलबूते लोकप्रिय बनने देने का अवसर दिया जाए।" इस कथन में किस गहरे आत्मविश्वास और कार्य-सिद्धांत का पता चलता है?

उत्तर: इस कथन से गहरे आत्मविश्वास और एक मौलिक कार्य-सिद्धांत का पता चलता है।

◦ **आत्मविश्वास:** यह इस बात का आत्मविश्वास है कि प्रस्तुत विचार और साहित्य इतना उपयोगी और शक्तिशाली है कि उसे लोकप्रिय होने के लिए किसी बाहरी सहारे या धन की याचना की आवश्यकता नहीं है। उसकी अपनी गुणवत्ता ही उसे जन-जन तक पहुँचाएगी।

◦ **कार्य-सिद्धांत:** यह सिद्धांत है कि सच्चा और स्थायी प्रभाव धन या प्रचार से नहीं, बल्कि प्रामाणिकता और उपयोगिता से पैदा होता है। यह एक मिशनरी दृष्टिकोण है जो व्यावसायिकता के विपरीत है। यह इस बात की भी परीक्षा है कि यदि विचार में दम होगा, तो समाज उसे स्वयं अपनाएगा।

अध्याय 24: प्रामाणिक तंत्र का विकास

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में एक-एक माह के कौन-से प्रशिक्षण सत्र चलते हैं?

उत्तर: वहाँ एक-एक माह के युग शिल्पी सत्र चलते हैं, जिनमें प्रचारक स्तर की योग्यता उत्पन्न की जाती है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में रहने वाले समर्पित कार्यकर्ता किस भावना से काम करते हैं?

उत्तर: वे ब्राह्मणोचित निर्वाह साधन लेकर, युग सृजन के लिए समर्पित भाव से उत्साहपूर्वक बारह घण्टे काम करते हैं।

3. प्रश्न: मिशन से प्रभावित लोग प्रतिदिन न्यूनतम कितना समय और अंशदान देते हैं?

उत्तर: वे प्रतिदिन न्यूनतम एक घण्टा समय और पचास पैसा अंशदान देते हैं।

4. प्रश्न: वानप्रस्थ परम्परा क्या थी और उसे पुनः जाग्रत करने की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर: वानप्रस्थ परम्परा में लोग अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त होकर अपना समय लोकमंगल के लिए लगाते थे। इसे पुनः जाग्रत करने की आवश्यकता है ताकि समाज को बड़ी संख्या में अनुभवी और अवैतनिक लोकसेवी मिल सकें।

5. प्रश्न: सन्त विनोबा के अनुसार किसी संस्था को कब तक जीवित रहना चाहिए?

उत्तर: उनके अनुसार, किसी संस्था को तभी तक जीवित रहना चाहिए जब तक जनता उसके कार्यों का मूल्यांकन करके उसे सहयोग दे। यदि सहयोग बंद हो जाए, तो संस्था को बंद कर देना चाहिए।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "शिक्षकों को शिक्षित करने के लिए ऊँचे स्तर के व्यक्तित्व चाहिए और प्रेरणाप्रद वातावरण भी।"

शान्तिकुञ्ज इन दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे करता है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज इन दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति इस प्रकार करता है:

- **ऊँचे स्तर के व्यक्तित्व:** यहाँ ऊँची नौकरियाँ और अपना सर्वस्व त्यागकर समर्पित भाव से सेवा करने वाले उच्च शिक्षित (एम.डी., पी.एच.डी. आदि) कार्यकर्ताओं का एक परिकर है, जो स्वयं एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

- **प्रेरणाप्रद वातावरण:** इन्हीं कार्यकर्ताओं की प्रामाणिकता, प्रखरता और प्रतिभा से एक ऐसा प्रेरणाप्रद वातावरण बनता है, जो शिविर में आने वालों के जीवन में कायाकल्प जैसे परिवर्तन लाता है।

2. प्रश्न: मिशन द्वारा आयोजित सम्मेलनों या आयोजनों में सम्मिलित होने की "दक्षिणा" क्या है?

उत्तर: इन आयोजनों में सम्मिलित होने की एक ही दक्षिणा है कि व्यक्ति एक दुष्प्रवृत्ति को छोड़े और एक सत्प्रवृत्ति को अपनाए। इस क्रम में लाखों लोगों ने अपनी बुराइयों को छोड़ा है।

3. प्रश्न: लेखक ने शान्तिकुञ्ज के मॉडल का उल्लेख क्यों किया है? उनका अन्य प्रतिभाओं से क्या आह्वान है?

उत्तर: लेखक ने शान्तिकुञ्ज के एक छोटे मॉडल का उल्लेख इसलिए किया है ताकि हर क्षेत्र की अन्य प्रतिभाएँ इससे प्रेरणा लेकर अपने-अपने लिए कार्य सोचें और युग सृजन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए महत्त्वपूर्ण कदम उठाएँ।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "कर्मठ और भावनाशील कार्यकर्ताओं की सर्वत्र कमी है, पर वे शान्तिकुञ्ज को अनायास ही मिलते चले

आ रहे हैं।" इस विरोधाभास का क्या कारण है?

उत्तर: इस विरोधाभास का मूल कारण शान्तिकुञ्ज के संचालकों का व्यक्तित्व और वहाँ का प्रामाणिक वातावरण है। जहाँ सामान्यतः संस्थाओं में नेतृत्व की प्रामाणिकता का अभाव होता है, वहीं शान्तिकुञ्ज में लोग संचालकों के व्यक्तित्व को हर कसौटी पर परखने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ऐसे वातावरण में रहकर और ऐसी कार्यशैली अपनाकर जीवन को धन्य बनाना चाहिए। यही प्रामाणिकता और आदर्श का चुम्बकत्व है जो कर्मठ और भावनाशील लोगों को अनायास ही अपनी ओर खींचता है।

2. प्रश्न: इस पुस्तक का अंतिम संदेश क्या है? यह पाठकों को केवल सूचना देना चाहता है या उनसे किसी विशेष भूमिका की अपेक्षा भी करता है?

उत्तर: इस पुस्तक का अंतिम संदेश केवल सूचना देना नहीं, बल्कि पाठकों को युग परिवर्तन के इस महान कार्य में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना है। लेखक शान्तिकुञ्ज का मॉडल प्रस्तुत करके यह सिद्ध करते हैं कि परिवर्तन संभव है और फिर वे सभी प्रतिभाशाली व्यक्तियों से आह्वान करते हैं कि वे भी अपने-अपने क्षेत्र में नव सृजन की आधारशिला रखने के लिए आगे आएँ। प्रकाशक का अनुरोध कि इस पुस्तक को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जाए, यह भी स्पष्ट करता है कि पुस्तक का उद्देश्य एक विचार-क्रांति को गति देना है, जिसमें हर पाठक एक सक्रिय सहभागी बने।

अध्याय 22: उज्ज्वल भविष्य की संरचना हेतु संकल्पित प्रयास सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: महत्वपूर्ण कार्यों का शुभारम्भ देव आवाहन के साथ क्यों किया जाता है?

उत्तर: महत्वपूर्ण कार्यों का शुभारम्भ देव आवाहन के साथ इसलिए किया जाता है ताकि अदृश्य शक्तियों की साक्षी और सहयोग प्राप्त हो सके।

2. प्रश्न: लेखक के अनुसार, इन दिनों कौन-से दोहरे महान परिवर्तन होने हैं?

उत्तर: इन दिनों पहला परिवर्तन अवांछनीय दुष्प्रवृत्तियों का निराकरण (समापन) और दूसरा उनके स्थान पर सत्प्रवृत्तियों का संस्थापन होना है।

3. प्रश्न: युग परिवर्तन की गति में असाधारण तीव्रता आने का क्या प्रतीक है?

उत्तर: इसका प्रतीक यह है कि जो कार्य पहले हजारों वर्षों में नहीं हो पाते थे, वे अब कुछ दशकों में ही संपन्न हो जाते हैं। इसे देखकर ऐसा लगता है कि कोई पुराने समय का व्यक्ति आज की दुनिया में आ जाए तो उसे परलोक जैसा लगेगा।

4. प्रश्न: युग-धर्म का पाञ्चजन्य उद्घोष क्या है?

उत्तर: महाकाल की प्रेरणा, ईश्वर की इच्छा और समय की मांग के अनुरूप इक्कीसवीं सदी में पतन का प्रवाह

रुकेगा और उज्ज्वल भविष्य की संरचना का कार्य तूफानी गति से आगे बढ़ेगा, यही युग-धर्म का पाञ्चजन्य उद्घोष है।

5. प्रश्न: युगसन्धि महापुरश्चरण का अद्भुत उपचार कहाँ आरम्भ हुआ है?

उत्तर: यह उपचार शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार के क्षेत्र से आरम्भ हुआ है।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "पानी के प्रवाह के साथ तिनके बहते चले जाते हैं।" इस उदाहरण के माध्यम से लेखक अदृश्य जगत की भूमिका के बारे में क्या समझाना चाहते हैं?

उत्तर: इस उदाहरण से लेखक यह समझाना चाहते हैं कि जैसे पानी के प्रवाह (अदृश्य शक्ति) के साथ चलने वाले तिनकों को कम मेहनत में अधिक गति मिलती है, वैसे ही जो व्यक्ति या प्रयास समय के प्रवाह और अदृश्य शक्तियों के अनुकूल होते हैं, उन्हें कम शक्ति लगाकर भी बड़ी सफलता मिलती है।

2. प्रश्न: लेखक क्यों कहते हैं कि भविष्य में होने वाले परिवर्तनों के पीछे मनुष्य की भूमिका तो होगी, पर उसके पीछे नियन्ता की प्रेरणा काम कर रही होगी?

उत्तर: लेखक ऐसा इसलिए कहते हैं क्योंकि उनका मानना है कि मनुष्य स्वयं में नगण्य है, लेकिन जब नियन्ता की प्रचण्ड प्रेरणा और सुनिश्चित योजना काम करती है, तो वही साधारण मनुष्य हनुमान और अर्जुन जैसी असाधारण भूमिका निभाता है। अतः, मनुष्य केवल एक माध्यम बनेगा, असली शक्ति और योजना नियन्ता की ही होगी।

3. प्रश्न: युग चेतना की गंगोत्री किसे कहा गया है और क्यों?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज को युग चेतना की गंगोत्री कहा गया है। ऐसा इसलिए क्योंकि जैसे गंगा गंगोत्री से निकलकर पूरे देश में फैल जाती है और सूर्य पूर्वाचल से निकलकर पूरे संसार को प्रकाशित करता है, उसी प्रकार युग परिवर्तन की चेतना का शुभारम्भ शान्तिकुञ्ज से होगा और फिर वह पूरे विश्व में फैल जाएगा।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: अध्याय के अनुसार, उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में 'प्रत्यक्ष पुरुषार्थ' और 'अदृश्य संकल्प' दोनों की आवश्यकता क्यों है? इन दोनों में क्या संबंध है?

उत्तर: उज्ज्वल भविष्य के निर्माण में दोनों की आवश्यकता इसलिए है क्योंकि परिवर्तन एक दोहरे मोर्चे पर होना है। 'प्रत्यक्ष पुरुषार्थ' जैसे राजनीतिक, आर्थिक और सामाजिक प्रयास बाहरी व्यवस्था को बदलते हैं, जबकि 'अदृश्य संकल्प' और आध्यात्मिक उपचार सूक्ष्म वातावरण को शुद्ध करते हैं जो इन बाहरी परिवर्तनों का आधार बनता है। इन दोनों में गहरा संबंध है; अदृश्य संकल्प और दैवी प्रेरणा प्रत्यक्ष पुरुषार्थ को दिशा, बल और सफलता प्रदान करते हैं। मनुष्य के प्रयास तभी सफल होते हैं जब उन्हें अदृश्य जगत का सहयोग प्राप्त

हो।

2. प्रश्न: "गीताकार ने अर्जुन से कहा था कि कौरव दल का मरण तो नियति ने ही करके रख दिया है, राज्य सुख और अक्षय यश का भागी बनने से कतराता क्यों है?" इस प्रसंग का वर्तमान युग परिवर्तन के संदर्भ में क्या महत्व है?

उत्तर: इस प्रसंग का वर्तमान युग परिवर्तन के संदर्भ में गहरा महत्व है। यह बताता है कि अवांछनीयताओं का विनाश और उज्ज्वल भविष्य का निर्माण महाकाल (नियन्ता) द्वारा पहले ही निश्चित किया जा चुका है, ठीक वैसे ही जैसे कौरवों का मरण नियति ने तय कर दिया था। अब जो भी प्रतिभाशाली और आदर्शवादी व्यक्ति इस परिवर्तन में सहयोग करेगा, वह केवल एक माध्यम बनेगा और उसे इस महान कार्य का श्रेय और सौभाग्य प्राप्त होगा। यह लोगों को निष्क्रिय रहने के बजाय युग-धर्म को पहचानकर इस महाअभियान में सक्रिय रूप से भाग लेने के लिए प्रेरित करता है।

अध्याय 23: विचारक्रान्ति का एक छोटा मॉडल

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज को इक्कीसवीं सदी के उज्ज्वल भविष्य की संरचना का क्या कहा गया है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज को इक्कीसवीं सदी के उपयुक्त उज्ज्वल भविष्य संरचना का एक छोटा मॉडल कहा गया है।

2. प्रश्न: युग क्रान्तियों में कौन-सी तीन अमोघ शक्तियाँ हमेशा अपनी भूमिका निभाती रही हैं?

उत्तर: वे तीन शक्तियाँ हैं: 1. महाप्रज्ञा की पक्षधर लेखनी, 2. जनमानस को झकझोरने वाली परिमार्जित वाणी, और 3. प्रामाणिकता सिद्ध करने वाले पुरोधाओं का समूह।

3. प्रश्न: विचार क्रान्ति के लिए लोगों को सहमत कराना क्यों कठिन होता है?

उत्तर: यह इसलिए कठिन होता है क्योंकि लोग पुरानी लीक से हटना नहीं चाहते, उन्हें लगता है कि इससे पूर्वजों की हेठी होती है और वे अपने पूर्वाग्रह के समर्थन में बेतुके तर्क देते हैं।

4. प्रश्न: अखण्ड ज्योति पत्रिका का आरम्भ कब और कितनी प्रतियों से हुआ था?

उत्तर: इसका आरम्भ आज से ५० वर्ष पूर्व (पुस्तक लेखन के समय से) ५०० प्रतियों से हुआ था।

5. प्रश्न: युग निर्माण योजना पत्रिका का विषय क्या था?

उत्तर: इस पत्रिका का विषय परिवार एवं सामाजिक निर्माण से संबंधित प्रतिपादन करना था, जो अखण्ड ज्योति की सीमा में नहीं आता था।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: विचार क्रान्ति के लिए प्रामाणिक लोगों की आवश्यकता क्यों होती है?

उत्तर: विचार क्रान्ति के लिए प्रामाणिक लोगों की आवश्यकता इसलिए होती है क्योंकि आज के समय में

आदर्शवादिता केवल कहने की चीज रह गई है। लोग उस पर तभी विश्वास करेंगे जब उसे प्रस्तुत करने वालों की कथनी और करनी एक हो और उनकी प्रामाणिकता पर कोई उँगली न उठती हो।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज की पत्रिकाओं के प्रकाशन की क्या विशेष नीति है और उसका क्या परिणाम हुआ है?

उत्तर: पत्रिकाओं के प्रकाशन की विशेष नीति है कि वे बिना कोई विज्ञापन लिए और बिना कोई अर्थ याचना किए, केवल अपनी उपयोगिता और पाठकों के सहयोग पर चलेंगी। वे "न लाभ, न हानि" (नो प्रॉफिट, नो लॉस) के सिद्धांत पर बहुत कम मूल्य पर प्रकाशित होती हैं। इसका परिणाम यह हुआ कि ये पत्रिकाएँ अपनी उपयोगिता के बल पर लाखों पाठकों तक पहुँच गई हैं।

3. प्रश्न: झोला पुस्तकालय की अवधारणा क्या है और यह किस भावना से काम करती है?

उत्तर: झोला पुस्तकालय की अवधारणा यह है कि पाठक अपने कन्धों पर झोले में पुस्तकें रखकर अपने परिचय क्षेत्र में जाते हैं, दूसरों को पढ़ने के लिए देते हैं और वापस लेते हैं। यह कार्य विशुद्ध सेवा भावना से होता है और इसमें किसी प्रकार के कमीशन का लेन-देन नहीं होता।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "भव्य भवन बनाने से पहले इनके छोटे आकार के मॉडल बना लिए जाते हैं।" शान्तिकुञ्ज इस अवधारणा को कैसे चरितार्थ करता है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज इस अवधारणा को इस प्रकार चरितार्थ करता है कि वह इक्कीसवीं सदी के विशाल और भव्य उज्ज्वल भविष्य का एक छोटा, व्यावहारिक और आनुपातिक मॉडल प्रस्तुत करता है। जिस प्रकार एक मॉडल को देखकर पूरी परियोजना की कल्पना की जा सकती है, उसी प्रकार शान्तिकुञ्ज की कार्यप्रणाली (लेखनी, वाणी और प्रामाणिक कार्यकर्ताओं का समन्वय) को देखकर यह समझा जा सकता है कि विश्वव्यापी विचार-क्रान्ति कैसे संभव होगी और नए युग का स्वरूप कैसा होगा।

2. प्रश्न: "याचना करने, अर्थ संग्रह करने की अपेक्षा सूत्र संचालकों द्वारा यह उचित समझा गया कि उपयोगिता को अपने बलबूते लोकप्रिय बनने देने का अवसर दिया जाए।" इस कथन में किस गहरे आत्मविश्वास और कार्य-सिद्धांत का पता चलता है?

उत्तर: इस कथन से गहरे आत्मविश्वास और एक मौलिक कार्य-सिद्धांत का पता चलता है।

◦ **आत्मविश्वास:** यह इस बात का आत्मविश्वास है कि प्रस्तुत विचार और साहित्य इतना उपयोगी और शक्तिशाली है कि उसे लोकप्रिय होने के लिए किसी बाहरी सहारे या धन की याचना की आवश्यकता नहीं है। उसकी अपनी गुणवत्ता ही उसे जन-जन तक पहुँचाएगी।

◦ **कार्य-सिद्धांत:** यह सिद्धांत है कि सच्चा और स्थायी प्रभाव धन या प्रचार से नहीं, बल्कि प्रामाणिकता और उपयोगिता से पैदा होता है। यह एक मिशनरी दृष्टिकोण है जो व्यावसायिकता के विपरीत है। यह इस बात की

भी परीक्षा है कि यदि विचार में दम होगा, तो समाज उसे स्वयं अपनाएगा।

अध्याय 24: प्रामाणिक तंत्र का विकास

सरल स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में एक-एक माह के कौन-से प्रशिक्षण सत्र चलते हैं?

उत्तर: वहाँ एक-एक माह के युग शिल्पी सत्र चलते हैं, जिनमें प्रचारक स्तर की योग्यता उत्पन्न की जाती है।

2. प्रश्न: शान्तिकुञ्ज में रहने वाले समर्पित कार्यकर्ता किस भावना से काम करते हैं?

उत्तर: वे ब्राह्मणोचित निर्वाह साधन लेकर, युग सृजन के लिए समर्पित भाव से उत्साहपूर्वक बारह घण्टे काम करते हैं।

3. प्रश्न: मिशन से प्रभावित लोग प्रतिदिन न्यूनतम कितना समय और अंशदान देते हैं?

उत्तर: वे प्रतिदिन न्यूनतम एक घण्टा समय और पचास पैसा अंशदान देते रहते हैं।

4. प्रश्न: वानप्रस्थ परम्परा क्या थी और उसे पुनः जाग्रत करने की आवश्यकता क्यों है?

उत्तर: वानप्रस्थ परम्परा में लोग अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त होकर अपना समय लोकमंगल के लिए लगाते थे। इसे पुनः जाग्रत करने की आवश्यकता है ताकि समाज को बड़ी संख्या में अनुभवी और अवैतनिक लोकसेवी मिल सकें।

5. प्रश्न: सन्त विनोबा के अनुसार किसी संस्था को कब तक जीवित रहना चाहिए?

उत्तर: उनके अनुसार, किसी संस्था को तभी तक जीवित रहना चाहिए जब तक जनता उसके कार्यों का मूल्यांकन करके उसे सहयोग दे। यदि सहयोग बंद हो जाए, तो संस्था को बंद कर देना चाहिए।

कठिन स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "शिक्षकों को शिक्षित करने के लिए ऊँचे स्तर के व्यक्तित्व चाहिए और प्रेरणाप्रद वातावरण भी।"

शान्तिकुञ्ज इन दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति कैसे करता है?

उत्तर: शान्तिकुञ्ज इन दोनों आवश्यकताओं की पूर्ति इस प्रकार करता है:

- **ऊँचे स्तर के व्यक्तित्व:** यहाँ ऊँची नौकरियाँ और अपना सर्वस्व त्यागकर समर्पित भाव से सेवा करने वाले उच्च शिक्षित (एम.डी., पी.एच.डी. आदि) कार्यकर्ताओं का एक परिकर है, जो स्वयं एक आदर्श प्रस्तुत करते हैं।

- **प्रेरणाप्रद वातावरण:** इन्हीं कार्यकर्ताओं की प्रामाणिकता, प्रखरता और प्रतिभा से एक ऐसा प्रेरणाप्रद वातावरण बनता है, जो शिविर में आने वालों के जीवन में कायाकल्प जैसे परिवर्तन लाता है।

2. प्रश्न: मिशन द्वारा आयोजित सम्मेलनों या आयोजनों में सम्मिलित होने की "दक्षिणा" क्या है?

उत्तर: इन आयोजनों में सम्मिलित होने की एक ही दक्षिणा है कि व्यक्ति एक दुष्प्रवृत्ति को छोड़े और एक सत्प्रवृत्ति को अपनाए। इस क्रम में लाखों लोगों ने अपनी बुराइयों को छोड़ा है।

3. प्रश्न: लेखक ने शान्तिकुञ्ज के मॉडल का उल्लेख क्यों किया है? उनका अन्य प्रतिभाओं से क्या आह्वान है?

उत्तर: लेखक ने शान्तिकुञ्ज के एक छोटे मॉडल का उल्लेख इसलिए किया है ताकि हर क्षेत्र की अन्य प्रतिभाएँ इससे प्रेरणा लेकर अपने-अपने लिए कार्य सोचें और युग सृजन की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण कदम उठाएँ।

कठिनतम स्तर के प्रश्न

1. प्रश्न: "कर्मठ और भावनाशील कार्यकर्ताओं की सर्वत्र कमी है, पर वे शान्तिकुञ्ज को अनायास ही मिलते चले आ रहे हैं।" इस विरोधाभास का क्या कारण है?

उत्तर: इस विरोधाभास का मूल कारण शान्तिकुञ्ज के संचालकों का व्यक्तित्व और वहाँ का प्रामाणिक वातावरण है। जहाँ सामान्यतः संस्थाओं में नेतृत्व की प्रामाणिकता का अभाव होता है, वहीं शान्तिकुञ्ज में लोग संचालकों के व्यक्तित्व को हर कसौटी पर परखने के बाद इस निष्कर्ष पर पहुँचते हैं कि ऐसे वातावरण में रहकर और ऐसी कार्यशैली अपनाकर जीवन को धन्य बनाना चाहिए। यही प्रामाणिकता और आदर्श का चुम्बकत्व है जो कर्मठ और भावनाशील लोगों को अनायास ही अपनी ओर खींचता है।

2. प्रश्न: इस पुस्तक का अंतिम संदेश क्या है? यह पाठकों को केवल सूचना देना चाहता है या उनसे किसी विशेष भूमिका की अपेक्षा भी करता है?

उत्तर: इस पुस्तक का अंतिम संदेश केवल सूचना देना नहीं, बल्कि पाठकों को युग परिवर्तन के इस महान कार्य में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए प्रेरित करना है। लेखक शान्तिकुञ्ज का मॉडल प्रस्तुत करके यह सिद्ध करते हैं कि परिवर्तन संभव है और फिर वे सभी प्रतिभाशाली व्यक्तियों से आह्वान करते हैं कि वे भी अपने-अपने क्षेत्र में नव सृजन की आधारशिला रखने के लिए आगे आएँ। प्रकाशक का यह अनुरोध कि इस पुस्तक को अधिक से अधिक लोगों तक पहुँचाया जाए, यह भी स्पष्ट करता है कि पुस्तक का उद्देश्य एक विचार-क्रांति को गति देना है, जिसमें हर पाठक एक सक्रिय सहभागी बने।

पुस्तक में वर्णित शब्द/शब्द समुच्चय एवं उनकी परिभाषाएँ

अध्याय 1-8

- **पूर्ति का सिद्धान्त** - यह मान्यता कि जिस प्रकार भी, जितना भी लाभ उठाया जा सके, उठाना चाहिए, उसमें सिद्धान्त को आड़े नहीं आने देना चाहिए।
- **आधुनिकता** - नीति और सदाचार का उन्मूलन करती हुई और मनुष्य को स्वेच्छाचारी बनाती हुई वह प्रवृत्ति जो विज्ञान और बुद्धिवाद की नई धाराओं के आधार पर तात्कालिक लाभ प्रस्तुत करती है।
- **अपव्ययी** - वे लोग जो फिजूलखर्ची करते हैं और परिणामस्वरूप तंगी भुगतते हैं।
- **सतयुग** - वह काल जब शक्तियों के सदुपयोग का प्रचलन था और साधारण साधनों के होते हुए भी लोग सुख-शांति से रहते थे।
- **कलियुग** - वह काल जब प्रचुर साधन होते हुए भी लोग मर्यादाओं का त्याग कर डरती-डराती और जलती-जलाती जिन्दगी जीते हैं।

अध्याय 9-16

- **बुद्धि के धनी** - एक प्रकार के वैज्ञानिक, क्योंकि शासन और समाज के विभिन्न तंत्र उन्हीं के संकेतों से चलते हैं।
- **विक्ट्री (Victory)** - एक नारा जिसका अर्थ है "जीतना हमें ही है, चाहे शत्रु कितना ही प्रबल क्यों न हो?"। यह सुनिश्चित विश्वास और विजय का प्रतीक बन गया था।
- **भागीरथी कार्य** - एक अत्यंत कठिन और विशाल कार्य, जैसे किसी उल्टे प्रवाह को उलटकर सीधा बनाना, जिसके लिए असाधारण साहस और निरंतर प्रयास की आवश्यकता हो।
- **युगसन्धि** - दो युगों के मिलन की वेला, जैसे बीसवीं सदी का अंत और इक्कीसवीं सदी का आरम्भ। इसमें एक ओर विनाश और दूसरी ओर सृजन की प्रक्रियाएँ साथ-साथ चलती हैं।
- **युगसन्धि का मध्यकाल** - युगसन्धि के भीतर का वह विशेष समय (सन् 1989 से 2000 तक) जिसमें सूक्ष्म और स्थूल परिवर्तनों की क्रांतिकारी तैयारी होती है।

अध्याय 17-21

- **युग** - जमाना या कालखंड, जिसे उस जमाने की विशेषताओं के साथ जोड़कर संबोधित किया जाता है, जैसे - विज्ञानयुग, ऋषियुग आदि।
- **व्यावहारिक युग** - बारह वर्ष का समय।
- **अन्तःस्फुरण** - मनुष्य के अन्तराल में निहित रहस्यमयी शक्तियों द्वारा मिलने वाली जानकारी, जिसका कोई प्रत्यक्ष आधार नहीं दिखता।

- **इलहाम** - मनःशक्ति सम्पन्न व्यक्ति (जैसे पैगम्बर या मनीषी) के माध्यम से ईश्वरीय वाणी का प्रकट होना। इसे एक प्रचण्ड विचार प्रवाह का प्रतीक माना जाता है।
- **भविष्य विज्ञान (Futurology)** - भविष्यवाणी तंत्र का एक अंग; एक विज्ञान सम्मत विधा जो वर्तमान के अध्ययन और कम्प्यूटर के आँकड़ों के आधार पर भविष्य के बारे में बताती है।
- **अवतार** - एक सामूहिक विकसित चेतना जो बिगड़ी हुई स्थिति को देखकर एक सुनियोजित विधि-व्यवस्था बनाती है।
- **निष्कलंक प्रज्ञावतार** - महाकाल की युग प्रत्यावर्तन प्रक्रिया जो किसी व्यक्ति के रूप में नहीं, बल्कि विचारशक्ति के रूप में अवतरित होती है।
- **आध्यात्मिक साम्यवाद** - आने वाले समय का एकता और समता का युग।
- **धर्मग्रन्थ** - ईश्वर की वाणी, जिन्हें "अपौरुषेय" (किसी पुरुष द्वारा न रचा गया) कहा गया है।

अध्याय 22-24

- **युग-धर्म का पाञ्चजन्य उद्घोष** - यह घोषणा कि महाकाल की प्रेरणा, ईश्वर की इच्छा और समय की मांग के अनुरूप इक्कीसवीं सदी में पतन का प्रवाह रुकेगा और उज्ज्वल भविष्य की संरचना होगी।
- **युग चेतना की गंगोत्री** - शान्तिकुञ्ज को दिया गया नाम, क्योंकि जैसे गंगोत्री से गंगा निकलकर पूरे देश में फैलती है, वैसे ही युग परिवर्तन की चेतना का शुभारम्भ यहाँ से होकर पूरे विश्व में फैलेगा।
- **दक्षिणा (मिशन के आयोजनों में)** - एक दुष्प्रवृत्ति को छोड़ने और एक सत्प्रवृत्ति को अपनाने का संकल्प।
- **वानप्रस्थ परम्परा** - वह परम्परा जिसमें लोग अपने पारिवारिक उत्तरदायित्वों से निवृत्त होकर अपना समय लोकमंगल के लिए लगाते थे।